PRACTICE MODEL PAPER 1

(Based on New Revised Syllabus)

(सम्पूर्ण हल)

हिन्दी कक्षा | 12

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक :** 100

निर्देश—(i) प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

(ii) इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं। दोनों खण्डों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना आवश्यक है।

खण्ड 'क'

1. (क) 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक हैं— 1

(i) बालकृष्ण भट्ट (ii) इंशा अल्ला खाँ
(iii) सदल मिश्र (iv) देवकीनन्दन खत्री।

उत्तर : (iii) सदल मिश्र।

(ख) 'परीक्षा गुरु' के लेखक हैं— 1

(i) नन्ददुलारे वाजपेयी (ii) लाला श्रीनिवासदास
(iii) डॉ० रामविलास शर्मा (iv) विद्यानिवास मिश्र।

उत्तर : (ii) लाला श्रीनिवासदास।

(ग) 'पैरों में पंख बाँधकर' के लेखक हैं— 1

(i) सेठ गोविन्ददास (ii) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
(iii) विष्णु प्रभाकर (iv) रामवृक्ष 'बेनीपुरी'।

उत्तर : (iv) रामवृक्ष 'बेनीपुरी'।

(घ) 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक हैं— 1

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) बनारसीदास चतुर्वेदी।

उत्तर : (ii) महावीरप्रसाद द्विवेदी।

©CHITRA PRAKASHAN

(ङ) 'कल्पवृक्ष' के रचनाकार हैं— 1

(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) जैनेन्द्र कुमार
(iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) अमृतराय।

उत्तर : (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल।

2. (क) 'प्रेम सरोवर' के रचयिता हैं— 1

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) माखनलाल चतुर्वेदी
(iii) जगन्नाथदास 'रत्नाकर' (iv) मैथिलीशरण गुप्त।

उत्तर : (i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

(ख) निम्न में से कौन-सी कृति रीतिकाल की है— 1

(i) पंचवटी (ii) रामचरितमानस
(iii) बिहारी सतसई (iv) परमाल रासो।

उत्तर : (iii) बिहारी सतसई।

(ग) 'लोकायतन' की विधा है— 1

(i) नाटक (ii) काव्य (कविता)
(iii) भेंटवार्त्ता (iv) संस्मरण।

उत्तर : (ii) काव्य (कविता)।

(घ) 'दीपशिखा' के रचनाकार हैं— 1

(i) रामधारीसिंह 'दिनकर'
(ii) भगवतीचरण वर्मा
(iii) महादेवी वर्मा
(iv) सच्चिदानन्द हीरानन्द 'अज्ञेय'।

उत्तर : (iii) महादेवी वर्मा।

(ङ) 'तार सप्तक' के सम्पादक हैं— 1

(i) भवानीप्रसाद मिश्र
(ii) धर्मवीर भारती
(iii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(iv) रामविलास शर्मा।

उत्तर : (iii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

3. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 5 × 2 = 10

मुझे मानव-जाति की दुर्दम-निर्मम धारा के हजारों वर्ष का रूप साफ दिखाई दे रहा है। मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती-बहाती यह जीवन-धारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने नई शक्ति पाई है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है। सबकुछ में मिलावट है, सबकुछ अविशुद्ध है। शुद्ध केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा (जीने की इच्छा)। वह गंगा की अबाधित-अनाहत धारा के समान सबकुछ को हजम करने के बाद भी पवित्र है।

प्रश्न : (क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी-साहित्य के सुप्रसिद्ध ललित निबन्धकार **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** द्वारा लिखित **'अशोक के फूल'** नामक निबन्ध से उद्धृत है। यह निबन्ध हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के गद्य भाग में संकलित है।

प्रश्न : (ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रेखांकित अंशों की व्याख्या—मनुष्य के जीने की इच्छा बड़ी ही ममताहीन है। यही कारण है कि मनुष्य स्वयं के जीवन के लिए कोई भी अनैतिक और क्रूर कार्य करने से नहीं चूकता। वह सदैव से सभ्यता और संस्कृति के आकर्षण में न फँसकर उसके प्रति व्यर्थ मोह को कुचलती हुई तेजी से अपने पथ पर अग्रसर होती रही है। यह हजारों वर्ष पूर्व से लेकर न जाने कितनी जातियों एवं संस्कृतियों की धार्मिक परम्पराओं, रीतियों-नीतियों, विश्वासों एवं उत्सव-व्रतों आदि को समाप्त करती हुई आज इस स्थिति में पहुँची है।

संसार में आज यदि कुछ अपने शुद्ध रूप में विद्यमान है तो वह है मनुष्य की प्रत्येक विषम परिस्थिति में भी जीवित रहने की इच्छा।

प्रश्न : (ग) "मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है।" इस पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : "मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है।" इस पंक्ति में निहित भाव यह है कि मनुष्य की जीने की इच्छा ममताहीन है। यही कारण है कि मनुष्य स्वयं के जीवन के लिए कोई भी अनैतिक और क्रूर कार्य करने से भी नहीं चूकता। वह सदैव से सभ्यता और संस्कृति के आकर्षण में न फँसकर

उसके प्रति व्यर्थ के मोह को कुचलती हुई तेजी से अपने पथ पर अग्रसर होती रही है।

प्रश्न : (घ) मनुष्य की जीवनी-शक्ति किन-किनको समाप्त करती हुई आज इस स्थिति में पहुँची है?

उत्तर : मनुष्य की जीवनी-शक्ति हजारों वर्ष पूर्व से लेकर न जाने कितनी जातियों और संस्कृतियों की धार्मिक परम्पराओं, रीतियों-नीतियों, विश्वासों एवं उत्सवों एवं व्रतों को समाप्त करती हुई आज इस स्थिति में पहुँची है।

प्रश्न : (ङ) संसार में आज भी अपने शुद्ध रूप में विद्यमान क्या है?

उत्तर : संसार में आज भी अपने शुद्ध रूप में यदि कुछ विद्यमान है तो वह है मनुष्य की प्रत्येक विषम परिस्थिति में भी जीवित रहने की इच्छा।

अथवा

पूर्वजों ने चरित्र और धर्म-विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी पराक्रम किया है, उस सारे विस्तार को हम गौरव के साथ धारण करते हैं और उसके तेज को अपने भावी जीवन में साक्षात् देखना चाहते हैं। यही राष्ट्र संवर्धन का स्वाभाविक प्रकार है। जहाँ अतीत वर्तमान के लिए भार रूप नहीं है, जहाँ भूत वर्तमान को जकड़ नहीं रखना चाहता, वरन् अपने वरदान से पुष्ट करके आगे बढ़ाना चाहता है, उस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं।

प्रश्न : (क) 'राष्ट्र संवर्धन' का प्रकार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : हम अपने पूर्वजों के चरित्र और धर्म-विज्ञान, साहित्य, कला एवं संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए जिस पराक्रम को गौरव के साथ धारण करते हैं तथा भावी जीवन में भी अपनी आँखों के सामने होते देखना चाहते हैं, वह सब राष्ट्र-संवर्धन का प्रकार है।

प्रश्न : (ख) 'अतीत वर्तमान के लिए भार रूप नहीं है' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'अतीत वर्तमान के लिए भार रूप नहीं है' का आशय यह है कि अतीत की बातें वर्तमान के लिए निरर्थक न होकर प्रासंगिक हैं।

प्रश्न : (ग) लेखक किस राष्ट्र का स्वागत करना चाहता है?

उत्तर : लेखक उस राष्ट्र का स्वागत करना चाहता है, जिसमें भूत वर्तमान को जकड़कर नहीं रखना चाहता, वरन् अपने वरदान से पुष्ट करके उसे आगे बढ़ाना चाहता है।

प्रश्न : (घ) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रेखांकित अंश की व्याख्या—सांस्कृतिक परिवेश विकास की एक पद्धति है। हमारे पूर्वजों ने चरित्र, धर्म, विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो उन्नति की है, उस पर गर्व करते हुए हम उसे राष्ट्र की विभूति के रूप में स्वीकार करते हैं। प्राचीनता के प्रति गौरव की भावना से हमारे मन में भावी प्रगति हेतु प्रबल आकांक्षा का उदय होता है। इस आकांक्षा को हम अपने भावी जीवन में साकार होता हुआ देखना चाहते हैं। हमारी कामना होती है कि इस गौरव को हम अपने जीवन में उतारें और अपने भविष्य को पुष्ट बनाएँ। यही राष्ट्र के विकास का स्वाभाविक ढंग है।

प्रश्न : (ङ) गद्यांश के पाठ का शीर्षक तथा लेखक का नाम बताइए।

उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश सुविदित साहित्यकार **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** द्वारा लिखित **'राष्ट्र का स्वरूप'** नामक निबन्ध से उद्धृत है। यह निबन्ध हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के गद्य भाग में संकलित है।

4. निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $5 \times 2 = 10$

मनु जुग पच्छ प्रतच्छ होत मिटि जात जमुन जल।
कै तारागन ठगन लुकट प्रकटत ससि अबिकल॥
कै कालिंदी तीर तरंग जितौ उपजावत।
तितनो ही धरि रूप मिलन हित तासों धावत॥
कै बहुत रजत चकई चलत कै फुहार जल उच्छरत।
कै निसिपति मल्ल अनेक बिधि उठि बैठत कसरत करत॥

प्रश्न : (क) कवि द्वारा यमुना की छवि का किस समय का वर्णन किया गया है?

उत्तर : कवि द्वारा यमुना की छवि का पूर्णिमा की रात्रि का वर्णन किया गया है।

प्रश्न : (ख) कवि ने चन्द्रमा के किन रूपों का वर्णन किया है?

उत्तर : कवि ने चन्द्रमा के यमुना की लहरों के साथ बनते-बिगड़ते रूपों का वर्णन किया है, मानो वह तारों के साथ लुका-छिपी का खेल खेल रहा है।

प्रश्न : (ग) 'जात जमुन जल' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर : 'जात जमुन जल' में अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न : (घ) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रेखांकित अंशों की व्याख्या—यमुना के चंचल जल में पूर्णिमा के चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है। इस दृश्य को देखकर कवि के मन में अनेक उत्प्रेक्षाओं और सन्देहों ने जन्म लिया है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो चन्द्रमा दोनों पक्षों (कृष्णपक्ष तथा शुक्लपक्ष दोनों) में उदित होकर यमुना के जल में विलीन हो जाता है अथवा तारा-समूहों को ठगने के लिए पूर्ण चन्द्रमा लुका-छिपी कर रहा हो।

जल के भीतर चाँदी की अनेक चकई चल रही हैं अथवा जल की फुहारें उठ रही हैं अथवा चन्द्रमारूपी पहलवान अनेक प्रकार के व्यायाम कर रहा है। तात्पर्य यह है कि चन्द्रमा (श्वेत) और यमुना का जल (श्याम) मिलकर असीम सौन्दर्य का दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रश्न : (ङ) पाठ का शीर्षक तथा कवि का नाम लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी-साहित्य के युग-निर्माता कविवर **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** द्वारा रचित काव्य-ग्रन्थ **'भारतेन्दु ग्रन्थावली'** से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित **'यमुना-छवि'** शीर्षक से उद्धृत है।

अथवा

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ-बन बीच गुलाबी रंग।
ओह! वह मुख! पश्चिम के व्योम–
बीच जब घिरते हों घन श्याम;
अरुण रवि मंडल उनको भेद
दिखाई देता हो छविधाम!

प्रश्न : (क) पद्यांश के पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश प्रसिद्ध छायावादी कवि **जयशंकरप्रसाद** द्वारा रचित **'कामायनी'** महाकाव्य के **'श्रद्धा-सर्ग'** से हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक के काव्य भाग में संकलित **'श्रद्धा-मनु'** शीर्षक से उद्धृत है।

प्रश्न : (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रेखांकित अंश की व्याख्या—श्रद्धा अपने शरीर पर नीले रंग का मेष-चर्म (भेड़ की खाल) धारण किए है। उसकी वेशभूषा में से कहीं-कहीं उसके कोमल और सुकुमार अंग दिखाई दे रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो नीले बादलों के वन में गुलाबी रंग का सुन्दर बिजली का फूल खिला हुआ हो।

प्रश्न : (ग) इन पंक्तियों में किसकी वेशभूषा का चित्रात्मक वर्णन किया गया है?

उत्तर : इन पंक्तियों में श्रद्धा की वेशभूषा/रूप का चित्रात्मक वर्णन किया गया है।

प्रश्न : (घ) श्रद्धा अपने शरीर पर किस प्रकार के वस्त्र धारण किए हुए है?

उत्तर : श्रद्धा अपने शरीर पर नीले रंग की भेड़ की खाल धारण किए थी।

प्रश्न : (ङ) उपर्युक्त में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर : उपर्युक्त में उत्प्रेक्षा एवं रूपक अलंकार है।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए— $3 + 2 = 5$

(i) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल
(ii) पं० दीनदयाल उपाध्याय
(iii) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

© CHITRA PRAKASHAN

उत्तर :

(i) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

जीवन-परिचय—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म **सन् 1904 ई०** में मेरठ जनपद के **खेड़ा** ग्राम में हुआ था। इनके माता-पिता लखनऊ में रहते थे; अत: इनका बाल्यकाल लखनऊ में ही व्यतीत हुआ। यहीं इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा भी प्राप्त की। इन्होंने 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' से एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। 'लखनऊ विश्वविद्यालय' ने 'पाणिनिकालीन भारत' शोध-प्रबन्ध पर इनको पी-एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया। यहीं से इन्होंने डी० लिट्० की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने पालि, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व का गहन अध्ययन किया और इन क्षेत्रों में उच्चकोटि के विद्वान् माने जाने लगे।

हिन्दी के इस प्रकाण्ड विद्वान् को **सन् 1967 ई०** में नियति ने हमसे छीन लिया।

रचनाएँ—डॉ० अग्रवाल ने निबन्ध-रचना, शोध और सम्पादन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) निबन्ध-संग्रह—(1) पृथिवी-पुत्र, (2) कल्पलता, (3) कला और संस्कृति, (4) कल्पवृक्ष, (5) भारत की एकता, (6) माता भूमि, (7) वाग्धारा आदि।

(2) शोध—पाणिनिकालीन भारत।

(3) सम्पादन—(1) जायसीकृत पद्मावत की संजीवनी व्याख्या, (2) बाणभट्ट के हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन। इसके अतिरिक्त इन्होंने पालि, प्राकृत और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का भी सम्पादन किया।

(ii) पं० दीनदयाल उपाध्याय

जीवन-परिचय—प्रखर विचारक और भारतीय संस्कृति के उपासक पं० दीनदयाल उपाध्याय का जन्म **25 सितम्बर, 1916 ई०** को मथुरा जिले के **नगला चन्द्रभान** नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम **भगवतीप्रसाद** और माता का नाम **रामप्यारी** था। इनके प्रपितामह **पण्डित हरिराम उपाध्याय** अपने समय के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनकी माता अत्यन्त कर्त्तव्यपरायण महिला थीं। इनके पिता भगवतीप्रसाद जलेसर में सहायक स्टेशन मास्टर थे। अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मात्र ढाई वर्ष की आयु में ये अपनी माता और भाई के साथ अपने नाना के यहाँ आ गए। कुछ दिनों पश्चात् इनके पिता की मृत्यु हो गई। इनकी आयु अभी सात वर्ष की ही थी कि इनकी माता रामप्यारी का भी क्षयरोग से देहान्त हो गया। इन्होंने दसवीं की परीक्षा सीना के कल्याण हाईस्कूल से दी और पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान पाकर तत्कालीन सीना के महाराजा कल्याण सिंह से स्वर्णपदक, छात्रवृत्ति और पुस्तकों के लिए 250 रुपये प्राप्त किए। इण्टरमीडिएट की परीक्षा इन्होंने पिलानी के बिरला कॉलेज से दी और इसमें भी इन्होंने पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन्होंने बी०ए० की परीक्षा सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर और एम०ए० पूर्वार्द्ध की परीक्षा अंग्रेजी विषय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अपनी ममेरी बहन की बीमारी के कारण ये एम०ए० अंग्रेजी उत्तरार्द्ध की परीक्षा नहीं दे सके। इसके बाद ये प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठे और उत्तीर्ण होकर कुछ दिन इन्होंने प्रशासनिक पद पर अपनी सेवाएँ दीं। इसके बाद इन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय हो गए। जब ये पिलानी में थे तो वहाँ अध्ययन करते हुए ही इन्होंने पढ़ाई में कमजोर छात्रों के लिए **'जीरो एसोसिएशन'** का गठन करके उन छात्रों को पढ़ाने की व्यवस्था की। ये राजनीति में भारतीयता और संस्कृति के समावेश के प्रबल समर्थक थे। अपनी इसी वैचारिक प्रखरता के कारण अनेक लोग इनसे मन-ही-मन द्वेष रखने लगे। इनके लिए यह वैचारिक विद्वेष प्राणघातक सिद्ध हुआ और लखनऊ से पटना की रेलयात्रा के दौरान **11 फरवरी, 1968 ई०** को प्रात:काल चार बजे मुगलसराय स्टेशन के पास रेलवे लाइन पर ये घायलावस्था में मृत पाए गए।

रचनाएँ—पण्डित दीनदयाल उपाध्याय उच्चकोटि के निबन्धकार, उपन्यासकार और सहृदय कवि थे। कवि के रूप में इन्हें विशेष ख्याति प्राप्त नहीं हुई। इनके द्वारा रचित प्रमुख रचनाओं का उल्लेख इस प्रकार है—

(1) उपन्यास—पण्डित दीनदयाल ने अपनी रेल-यात्राओं के दौरान दो प्रसिद्ध उपन्यास लिखे—(1) सम्राट् चन्द्रगुप्त, (2) शंकराचार्य की जीवनी। लेखन के प्रति इनकी प्रतिबद्धता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' का लेखन इन्होंने एक ही बैठक में पूर्ण कर दिया।

(2) निबन्ध-संग्रह—(1) एकात्म मानववाद, (2) द टू प्लान्स, (3) भारतीय अर्थनीति : दशा और दिशा, (4) अखण्ड भारत क्यों?, (5) भारतीय अर्थनीति : विकास की दशा, (6) राष्ट्रीय जीवन की समस्याएँ, (7) इण्टेग्रिल ह्यूमनिज्म, (8) राष्ट्र-चिन्तन, (9) राष्ट्र-जीवन की दिशा, (10) भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा, (11) टैक्स या लूट, (12) लोकमान्य तिलक की राजनीति, (13) जनसंघ : सिद्धान्त एवं नीति, (14) जीवन का ध्येय, (15) राष्ट्रीय आत्मानुभूति, (16) हमारा कश्मीर, (17) अखण्ड भारत, (18) भारतीय राष्ट्रीयधारा का पुन: प्रवाह, (19) भारतीय संविधान पर एक दृष्टि, (20) इनको भी आजादी चाहिए।

(iii) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

जीवन-परिचय—हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकार, उपन्यासकार, आलोचक एवं भारतीय संस्कृति के युगीन व्याख्याता आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म **सन् 1907 ई०** में बलिया जिले के **दुबे का छपरा** नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम **अनमोल द्विवेदी** और माता का नाम **ज्योतिकली देवी** था। इन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत भाषाओं का गहन अध्ययन किया। 'शान्ति निकेतन', 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' एवं 'पंजाब विश्वविद्यालय' जैसी संस्थाओं में ये हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रहे। सन् 1949 ई० में 'लखनऊ विश्वविद्यालय' ने उन्हें डी० लिट्० की मानद उपाधि से सम्मानित किया तथा सन् 1957 ई० में भारत सरकार ने 'पद्म-भूषण' की उपाधि से विभूषित किया। ये उत्तर प्रदेश सरकार की 'हिन्दी ग्रन्थ अकादमी' के अध्यक्ष भी रहे।

सेवा-निवृत्त होने के पश्चात् भी ये निरन्तर साहित्य-सेवा में जुटे रहे। **19 मई, सन् 1979 ई०** को यह महान् साहित्यकार रोग-शय्या पर ही चिरनिद्रा में सो गया।

रचनाएँ—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिनको निम्नलिखित वर्गों में प्रस्तुत किया गया है—

(1) निबन्ध-संग्रह—(1) अशोक के फूल, (2) कुटज, (3) विचार-प्रवाह, (4) विचार और वितर्क, (5) आलोक पर्व, (6) कल्पलता।

(2) आलोचना-साहित्य—(1) सूर-साहित्य, (2) कालिदास की लालित्य योजना, (3) कबीर, (4) साहित्य-सहचर, (5) साहित्य का मर्म।

(3) इतिहास—(1) हिन्दी-साहित्य की भूमिका, (2) हिन्दी-साहित्य का आदिकाल, (3) हिन्दी-साहित्य।

(4) उपन्यास—(1) बाणभट्ट की आत्मकथा, (2) चारु-चन्द्र-लेख, (3) पुनर्नवा, (4) अनामदास का पोथा।

(5) सम्पादन—(1) नाथ-सिद्धों की बानियाँ, (2) संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, (3) सन्देश रासक।

(6) अनूदित रचनाएँ—(1) प्रबन्ध-चिन्तामणि, (2) पुरातन-प्रबन्ध-संग्रह, (3) प्रबन्ध-कोश, (4) विश्व-परिचय, (5) लाल कनेर, (6) मेरा बचपन आदि।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए— **3 + 2 = 5**

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र **(ii) जयशंकरप्रसाद**
(iii) सुमित्रानन्दन पन्त।

उत्तर :

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

जीवन-परिचय—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म काशी में **संवत् 1907 (सन् 1850 ई०)** में हुआ था। इनके पिता का नाम **गोपालचन्द्र**

© CHITRA PRAKASHAN

'**गिरिधरदास**' था। पारिवारिक दायित्व के बोझ के कारण ये विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके, तथापि इन्होंने हिन्दी, बाँग्ला, संस्कृत एवं मराठी भाषा का ज्ञान घर पर ही प्राप्त किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की माता इन्हें पाँच वर्ष की उम्र में ही छोड़कर चल बसी थीं। तत्पश्चात् इनके पिता की भी मृत्यु हो गई। जब इनके पिता की मृत्यु हुई, इनकी अवस्था मात्र दस वर्ष थी। 34 वर्ष 4 मास की अल्प अवस्था में **संवत् 1941 (सन् 1885 ई०)** में इनका निधन हो गया।

साहित्यिक परिचय—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। ये नाटककार, निबन्धकार, कवि, सम्पादक आदि के रूप में जाने जाते हैं। नाटक एवं कविता के क्षेत्र में इनकी प्रतिभा का सर्वाधिक विकास हुआ। इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर देश के सुप्रसिद्ध विद्वानों ने इन्हें 'भारतेन्दु' की उपाधि से विभूषित किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अनेक भारतीय भाषाओं में कविता करते थे, किन्तु ब्रजभाषा पर इनका विशेष अधिकार था। ब्रजभाषा में इन्होंने अधिकतर श्रृंगारिक रचनाएँ की हैं। इन्होंने केवल प्रेम के विषय पर ही जो कविताएँ लिखीं, उनके सात संग्रह प्रकाशित हुए। इन संग्रहों के नाम 'प्रेम-फुलवारी', 'प्रेम-प्रलाप', 'प्रेमाश्रु-वर्षण', 'प्रेम-माधुरी', 'प्रेम-मालिका', 'प्रेम-तरंग' एवं 'प्रेम-सरोवर' हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एक युग-प्रवर्त्तक साहित्यकार थे। इन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए हिन्दी-साहित्य के विकास में अमूल्य योगदान दिया। मात्र 18 वर्ष की अवस्था में इन्होंने 'कवि-वचन-सुधा' नामक पत्रिका का सम्पादन तथा प्रकाशन प्रारम्भ किया और तत्कालीन कवियों का पथ-प्रदर्शन करने लगे। पाँच वर्ष के उपरान्त इन्होंने दूसरी पत्रिका 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का सम्पादन एवं प्रकाशन प्रारम्भ किया। भारतेन्दुजी नौ वर्ष की अल्पायु से ही कविताएँ करने लगे थे।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के हृदय में अपनी मातृभाषा के प्रति अगाध प्रेम था। इन्होंने हिन्दी को तत्कालीन विद्यालयों में स्थान दिलवाने का प्रयत्न किया और अपने सहयोगी कवि एवं लेखकों से आग्रहपूर्वक लिखवाकर तथा स्वयं लिखकर हिन्दी-साहित्य को समृद्ध किया। इन्हें हिन्दी-साहित्य के आधुनिक युग का प्रवर्त्तक माना जाता है।

रचनाएँ—भारतेन्दु बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने कविता, नाटक, निबन्ध तथा इतिहास आदि अनेक विषयों पर पुस्तकों की रचना की। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(क) काव्य-कृतियाँ—'प्रेम-माधुरी', 'प्रेम-तरंग', 'प्रेमाश्रु-वर्षण', 'प्रेम-प्रलाप', 'दानलीला', 'प्रेम-सरोवर', 'कृष्ण-चरित्र', 'प्रेम-मालिका' आदि भक्ति तथा दिव्य प्रेम पर आधारित रचनाएँ हैं। इनमें श्रीकृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन हुआ है।

'भारत-वीरत्व', 'विजय-वल्लरी', 'विजयिनी' एवं 'विजय-पताका' आदि देशप्रेम सम्बन्धी रचनाएँ हैं।

'बन्दर-सभा' और 'बकरा-विलाप' में हास्य-व्यंग्य शैली के दर्शन होते हैं।

(ख) नाटक—भारतेन्दुजी ने अनेक नाटकों की रचना की। इनमें 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'श्रीचन्द्रावली', 'भारत-दुर्दशा', 'नीलदेवी' और 'अँधेर नगरी' आदि प्रमुख हैं।

(ग) उपन्यास—'पूर्णप्रकाश' और 'चन्द्रप्रभा' इनके द्वारा रचित उपन्यास हैं।

(घ) इतिहास और पुरातत्त्व सम्बन्धी—'कश्मीर-कुसुम', 'महाराष्ट्र देश का इतिहास', 'रामायण का समय', 'अग्रवालों की उत्पत्ति', 'बूँदी का राजवंश' तथा 'चरितावली'।

भारतेन्दुजी ने 'कवि-वचन-सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' आदि पत्रिकाओं का भी सफल सम्पादन किया। बाद में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का नाम बदलकर 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' हो गया।

(ii) जयशंकरप्रसाद

जीवन-परिचय—छायावादी युग के प्रवर्त्तक महाकवि जयशंकरप्रसाद का जन्म काशी के एक सम्पन्न वैश्य-परिवार में **सन् 1889 ई० (संवत् 1946)** में हुआ था। इनके पिता तथा बड़े भाई बचपन में ही स्वर्गवासी हो गए थे। अल्पावस्था में ही लाड़-प्यार से पले प्रसादजी को घर का सारा भार वहन करना पड़ा। इन्होंने विद्यालयीय शिक्षा छोड़कर घर पर ही अंग्रेजी, हिन्दी, बाँग्ला तथा संस्कृत आदि भाषाओं का ज्ञानार्जन किया। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी इन्होंने अपने भीतर काव्य-प्रेरणा को जीवित रखा। जब भी समय मिलता, इनका मन भाव-जगत् के पुष्प चुनता, जिन्हें ये दुकान की बही के पन्नों पर सँजो दिया करते थे।

अत्यधिक श्रम तथा जीवन के अन्तिम दिनों में राजयक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण **14 नवम्बर, सन् 1937 ई० (संवत् 1994)** को 48 वर्ष की अल्पायु में ही इनका स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक परिचय—द्विवेदी युग से अपनी काव्य-रचना का प्रारम्भ करनेवाले महाकवि जयशंकरप्रसाद छायावादी काव्य के जन्मदाता एवं छायावादी युग के प्रवर्त्तक समझे जाते हैं। इनकी रचना 'कामायनी' एक कालजयी कृति है, जिसमें छायावादी प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं का समावेश हुआ है। अन्तर्मुखी कल्पना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रसाद के काव्य की मुख्य विशेषता रही है।

प्रसाद छायावादी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि रहे हैं। प्रेम और सौन्दर्य इनके काव्य का प्रमुख विषय रहा है, किन्तु इनका दृष्टिकोण इसमें भी विशुद्ध मानवतावादी रहा है। इन्होंने अपने काव्य में आध्यात्मिक आनन्दवाद की प्रतिष्ठा की है। ये जीवन की चिरन्तन (अनिवार्य रूप से उत्पन्न होनेवाली स्थायी) समस्याओं का मानवीय दृष्टिकोण पर आधारित समाधान ढूँढने के लिए प्रयत्नशील रहे। इनका दृष्टिकोण था कि इच्छा, ज्ञान एवं क्रिया का सामंजस्य ही उच्चस्तरीय मानवता का परिचायक है।

प्रसाद आधुनिक हिन्दी काव्य के सर्वप्रथम कवि थे। इन्होंने अपनी कविताओं में सूक्ष्म अनुभूतियों का रहस्यवादी चित्रण प्रारम्भ किया और हिन्दी काव्य-जगत् में एक नवीन क्रान्ति उत्पन्न कर दी। इनकी इसी क्रान्ति ने एक नए युग का सूत्रपात किया, जिसे 'छायावादी युग' के नाम से जाना जाता है।

रचनाएँ—प्रसादजी सर्वतोन्मुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थे। इन्होंने कुल 67 रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इनकी प्रमुख काव्य-रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

(1) कामायनी—यह महाकाव्य छायावादी काव्य का कीर्ति-स्तम्भ है। इस महाकाव्य में मनु और श्रद्धा के माध्यम से मानव को हृदय (श्रद्धा) और बुद्धि (इड़ा) के समन्वय का सन्देश दिया गया है।

(2) आँसू—यह वियोग पर आधारित काव्य है। इसके एक-एक छन्द में दु:ख और पीड़ा साकार हो उठी है।

(3) चित्राधार—यह प्रसादजी का ब्रजभाषा में रचित काव्य-संग्रह है।

(4) लहर—इसमें प्रसादजी की भावात्मक कविताएँ संगृहीत हैं।

(5) झरना—यह प्रसादजी की छायावादी कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह में सौन्दर्य और प्रेम की अनुभूतियों को मनोहारी रूप में वर्णित किया गया है।

इनके अतिरिक्त प्रसादजी ने अन्य विधाओं में भी साहित्य-रचना की है। उनका विवरण इस प्रकार है—

(1) नाटक—नाटककार के रूप में उन्होंने 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'कामना', 'एक घूँट', 'विशाख', 'राज्यश्री', 'कल्याणी', 'अजातशत्रु' और 'प्रायश्चित्त' नाटकों की रचना की है।

(2) उपन्यास—'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अपूर्ण रचना)।

(3) कहानी-संग्रह—प्रसादजी उत्कृष्ट कोटि के कहानीकार थे। इनकी कहानियों में भारत का अतीत मुस्कराता है। 'प्रतिध्वनि', 'छाया', 'आकाशदीप', 'आँधी' और 'इन्द्रजाल' इनके कहानी-संग्रह हैं।

(4) निबन्ध—'काव्य और कला'।

(iii) सुमित्रानन्दन पन्त

जीवन-परिचय—प्रकृति-चित्रण के अमर गायक कविवर सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म **20 मई, सन् 1900 ई० (संवत् 1957)** को अल्मोड़ा के

© CHITRA PRAKASHAN

निकट कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। जन्म के 6 घण्टे के बाद ही इनकी माता का देहान्त हो गया। पिता तथा दादी के वात्सल्य की छाया में इनका प्रारम्भिक लालन-पालन हुआ। पन्तजी ने सात वर्ष की अवस्था से ही काव्य-रचना आरम्भ कर दी थी। पन्तजी की शिक्षा का पहला चरण अल्मोड़ा में पूरा हुआ। यहीं पर उन्होंने अपना नाम गुसाईंदत्त से बदलकर सुमित्रानन्दन रख लिया। सन् 1919 ई० में पन्तजी अपने मँझले भाई के साथ बनारस चले आए। यहाँ पर उन्होंने क्वीन्स कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की। सन् 1950 ई० में वे 'ऑल इण्डिया रेडियो' के परामर्शदाता के पद पर नियुक्त हुए और सन् 1957 ई० तक वे प्रत्यक्ष रूप से रेडियो से सम्बद्ध रहे। सरस्वती के इस पुजारी ने **28 दिसम्बर, सन् 1977 ई० (संवत् 2034)** को इस भौतिक संसार से सदैव के लिए विदा ले ली।

साहित्यिक परिचय—छायावादी युग के ख्याति-प्राप्त कवि सुमित्रानन्दन पन्त सात वर्ष की अल्पायु से ही कविताओं की रचना करने लगे थे। उनकी प्रथम रचना सन् 1916 ई० में सामने आई। 'गिरजे का घण्टा' नामक इस रचना के पश्चात् वे निरन्तर काव्य-साधना में तल्लीन रहे। सन् 1919 ई० में इलाहाबाद के 'म्योर कॉलेज' में प्रवेश लेने के पश्चात् उनकी काव्यात्मक रुचि और भी अधिक विकसित हुई। सन् 1920 ई० में उनकी रचनाएँ 'उच्छ्वास' एवं 'ग्रन्थि' प्रकाशित हुईं। सन् 1921 ई० में उन्होंने महात्मा गांधी के आह्वान पर कॉलेज छोड़ दिया और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में सम्मिलित हो गए, परन्तु अपनी कोमल प्रकृति के कारण सत्याग्रह में सक्रिय रूप से सहयोग नहीं कर पाए और सत्याग्रह छोड़कर पुन: काव्य-साधना में तल्लीन हो गए।

उनके सन् 1927 ई० में 'वीणा' एवं सन् 1928 ई० में 'पल्लव' नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए। इसके पश्चात् सन् 1939 ई० में कालाकांकर आकर इन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन प्रारम्भ किया और प्रयाग आकर 'रूपाभा' नामक एक प्रगतिशील विचारोंवाली पत्रिका का सम्पादन-प्रकाशन प्रारम्भ किया। सन् 1942 ई० के पश्चात् वे महर्षि अरविन्द घोष से मिले और उनसे प्रभावित होकर अपने काव्य में उनके दर्शन को मुखरित किया। इन्हें इनकी रचना 'कला और बूढ़ा चाँद' पर 'साहित्य अकादमी', 'लोकायतन' पर 'सोवियत' और 'चिदम्बरा' पर 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार मिला।

सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में कल्पना एवं भावों की सुकुमार कोमलता के दर्शन होते हैं। इन्होंने प्रकृति एवं मानवीय भावों के चित्रण में विकृत तथा कठोर भावों को स्थान नहीं दिया है। इनकी छायावादी कविताएँ अत्यन्त कोमल एवं मृदुल भावों को अभिव्यक्त करती हैं। इन्हीं कारणों से पन्त को 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है।

रचनाएँ—पन्तजी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकार थे। अपने विस्तृत साहित्यिक जीवन में उन्होंने विविध विधाओं में साहित्य-रचना की। उनकी प्रमुख कृतियों का विवरण निम्न प्रकार है—

(1) लोकायतन—इस महाकाव्य में कवि की सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारधारा व्यक्त हुई है। इस रचना में कवि ने ग्राम्य-जीवन और जन-भावना को छन्दोबद्ध किया है।

(2) वीणा—इस रचना में पन्तजी के प्रारम्भिक प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य से पूर्ण गीत संगृहीत हैं।

(3) पल्लव—इस संग्रह में प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य के व्यापक चित्र प्रस्तुत किए गए हैं।

(4) गुंजन—इसमें प्रकृति-प्रेम और सौन्दर्य से सम्बन्धित गम्भीर एवं प्रौढ़ रचनाएँ संकलित की गई हैं।

(5) ग्रन्थि—इस काव्य-संग्रह में वियोग का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित हुआ है। प्रकृति यहाँ भी कवि की सहचरी रही है।

(6) अन्य कृतियाँ—'स्वर्णधूलि', 'स्वर्ण-किरण', 'युगपथ', 'उत्तरा' तथा 'अतिमा' आदि में पन्तजी महर्षि अरविन्द के नवचेतनावाद से प्रभावित हैं। 'युगान्त', 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' में कवि समाजवाद और भौतिक दर्शन की ओर उन्मुख हुआ है। इन रचनाओं में कवि ने दीन-हीन और शोषित वर्ग को अपने काव्य का आधार बनाया है।

6. कहानी के प्रमुख तत्त्वों के आधार पर 'पंचलाइट' कहानी की समीक्षा कीजिए। **5**

उत्तर :

पंचलाइट कहानी की तात्त्विक समीक्षा

पंचलाइट कहानी की तात्त्विक समीक्षा निम्नलिखित है—

(1) कथानक/कथावस्तु *(2009, 19)*—प्रस्तुत कहानी में रेणुजी ने पेट्रोमैक्स (जिसे गाँववाले 'पंचलैट' कहते हैं) के माध्यम से ग्रामीण वातावरण का चित्रण किया है और ग्रामवासियों की मनोस्थिति की वास्तविक झलक प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत कहानी घटनाप्रधान है। महतो टोली के पंच पेट्रोमैक्स खरीद तो लाते हैं, किन्तु वे उसे जलाने की विधि नहीं जानते। उनके लिए यह अपमान की बात है कि उनका 'पंचलैट' पहली ही बार किसी दूसरी टोली के सदस्य द्वारा जलाया जाए। समस्या का समाधान मुनरी के पास है, परन्तु वह कैसे बताए? उसके प्रेमी गोधन का हुक्का-पानी पंचायत ने बन्द कर रखा है और वही 'पंचलैट' जलाना जानता है। इस समय जाति की प्रतिष्ठा का प्रश्न है; अत: गोधन को पंचायत में आने की अनुमति प्रदान कर दी जाती है। वह 'पंचलैट' को स्प्रिट के अभाव में गरी (नारियल) के तेल से ही जला देता है। अब न केवल गोधन पर लगे सारे प्रतिबन्ध हट जाते हैं, वरन् उसे मनोनुकूल आचरण की छूट भी मिल जाती है। इस प्रकार 'पंचलाइट' जलाने की समस्या और उसके समाधान के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण मनोविज्ञान का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है। आवश्यकता किस प्रकार बड़े-से-बड़े रूढ़िगत संस्कार और निषेध को अनावश्यक सिद्ध कर देती है, इसी केन्द्रीय भाव को इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार कहानी का कथानक अत्यन्त संक्षिप्त, रोचक और जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाला है।

शीर्षक—कहानी का शीर्षक 'पंचलाइट' ग्रामीण लोकभाषा के आंचलिक प्रभाव से युक्त तथा सम्पूर्ण कहानी के भाव को व्यक्त करनेवाला है। इस प्रकार यह कहानी ग्रामीण जीवन की सजीव झाँकी प्रस्तुत करने में समर्थ है।

(2) पात्र और चरित्र-चित्रण—प्रस्तुत कहानी चरित्रप्रधान कहानी नहीं है, इसमें आंचलिकता को ही विशेष महत्त्व दिया गया है, फिर भी कहानीकार ने कुछ पात्रों के चरित्रों की रेखाएँ उभारने का प्रयास किया है। इस कहानी में सरदार, दीवान, गुलरी काकी और फुटंगी झा एक वर्ग के पात्र हैं तथा गोधन और मुनरी दूसरे वर्ग के।

सरदार में मुखिया की सभी विशेषताएँ दर्शाई गई हैं। वह अपने प्रत्येक कथन को आदेश मानता है।

फुटंगी झा स्वभाव से विनोदी और हँसमुख हैं और दूसरों का मजाक बनानेवाले हैं।

गोधन साधारण मनचला युवक है, किन्तु पंचलाइट जलाने की विशिष्ट जानकारी के कारण वर्तमान प्रसंग में वह उपयोगी सिद्ध होता है। पंचलाइट जलाने की योग्यता के कारण उसे फिर से जाति में सम्मिलित कर लिया जाता है और गाँव में स्वच्छन्द विचरण की छूट भी मिल जाती है।

मुनरी एक साधारण ग्रामबाला है, जो गोधन से प्रभावित है। उसमें नारी-सुलभ शील और संकोच भी है। गोधन के विषय में स्वयं जानकारी देने में उसे लज्जा महसूस होती है; अत: वह अपनी बात सहेली **कनेली** के माध्यम से बताती है।

मुनरी की माँ **गुलरी काकी** परम्पराओं और रूढ़ियों की अनुयायी होते हुए भी गुणों का आदर करती है।

इस प्रकार इस कहानी के सभी पात्र सजीव प्रतीत होते हैं। कहानी में ग्रामवासियों की मनोवृत्तियों का परिचय बड़े जीवन्त और यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेखक को ग्रामीण समूह के चरित्र को उभारने में विशेष सफलता मिली है।

(3) कथोपकथन या संवाद—प्रस्तुत कहानी के संवाद संक्षिप्त, रोचक, सरल और स्वाभाविक हैं। अनावश्यक और लम्बे संवाद इस कहानी में नहीं हैं। बिहार के ग्रामीण अंचल की भाषा का प्रयोग करके संवादों की स्वाभाविकता को बढ़ाया गया है। संवादों के माध्यम से ग्रामीण जीवन की

© CHITRA PRAKASHAN

अशिक्षा, रूढ़िवादिता और अज्ञानता पर प्रकाश डालकर जीवन्त वातावरण की सृष्टि की गई है। स्वाभाविक संवाद-योजना का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

मुनरी ने चालाकी से अपनी सहेली कनेली के कान में बात डाल दी—'कनेली ! .... चिगो, चिध-ऽ-ऽ, चिन .... ।' कनेली मुस्कराकर रह गई—गोधन तो बन्द है। मुनरी बोली—तू कह तो सरदार से।

'गोधन जानता है पंचलैट बालना।' कनेली बोली।

कौन, गोधन? जानता है बालना? लेकिन .... ।

इस प्रकार इस कहानी के संवाद पात्र व परिस्थितियों के अनुकूल हैं और कहानीकार ने उनका चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर किया है।

(4) भाषा-शैली—प्रस्तुत कहानी की भाषा बिहार के ग्रामीण अंचलों में बोली जानेवाली जनभाषा है। उसमें स्वाभाविकता और व्यावहारिकता का विशेष ध्यान रखा गया है। ग्रामवासी शब्दों का अशुद्ध उच्चारण करते हैं। रेणुजी ने ग्रामवासियों के मुख से ग्रामीण-भाषा का ही प्रयोग कराया है। उदाहरणार्थ—

''टोले की कीर्तन-मण्डली के मूलगैन ने अपने भगतिया पच्छकों को समझाकर कहा—देखो, आज पंचलैट की रोशनी में कीर्तन होगा। बेताले लोगों से पहले ही कह देता हूँ, आज यदि आखर धरने में डेढ़-बेढ़ हुआ, तो दूसरे दिन से एकदम बैकाट!''

रेणुजी ने प्रस्तुत कहानी में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। पूरी कहानी ग्रामीणों की अज्ञानता, अशिक्षा, रूढ़िवादिता पर व्यंग्य करती हुई आगे बढ़ती है। हास्य-व्यंग्यप्रधान शैली का एक उदाहरण इस प्रकार है—

''एक नौजवान ने आकर सूचना दी—राजपूत टोली के लोग हँसते-हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट के सामने पाँच बार उठो-बैठो, तुरन्त जलने लगेगा।''

(5) देश-काल और वातावरण—रेणुजी ग्रामीण अंचल को चित्रित करने में सिद्धहस्त हैं। इस कहानी में बिहार के ग्रामीण अंचल का चित्र प्रस्तुत किया गया है। वातावरण की सजीवता पाठकों को सहज ही आकर्षित कर लेती है। 'पंचलाइट' के माध्यम से ग्रामीण वातावरण का चित्रण करते हुए ग्रामवासियों के मनोविज्ञान की वास्तविक झलक प्रस्तुत की गई है। ग्रामीणों के आचार-विचार, अन्धविश्वास और कुरीतियों का भी सजीव चित्रण हुआ है। यद्यपि कहानीकार ने वातावरण का वर्णन नहीं किया है, तथापि घटनाओं और पात्रों के माध्यम से वातावरण स्वयं जीवन्त हो उठा है।

(6) उद्देश्य *(2015)*—ग्रामवासी जाति के आधार पर किस प्रकार टोलियों में विभक्त हो जाते हैं और परस्पर ईर्ष्या-द्वेष के भावों से भरे रहते हैं, इसका बड़ा ही सजीव और यथार्थ चित्रण इस कहानी में किया गया है। परोक्ष रूप से रेणुजी ने ग्राम-सुधार की प्रेरणा भी दी है। इसी के साथ कहानीकार ने यह भी सिद्ध किया है कि आवश्यकता बड़े-से-बड़े संस्कार और निषेध को अनावश्यक सिद्ध कर देती है।

अथवा

'बहादुर' अथवा 'कर्मनाशा की हार' कहानी के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

'बहादुर' कहानी के प्रमुख पात्र दिलबहादुर का चरित्र-चित्रण

दिलबहादुर के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) परिश्रमी बालक—बहादुर बहुत परिश्रमी बालक है। वह घर के किसी काम में आलस्य नहीं करता। थकान तो वह जानता ही नहीं है। निर्मला के घर में वह सुबह से रात तक दौड़-दौड़कर काम करता है। इसी कारण अल्प समय में ही अपनी मेहनत से उसने परिवार के सभी सदस्यों को प्रभावित कर लिया है।

(2) भोला और छल-कपटरहित—बहादुर बहुत ही भोला है। छल-कपट उससे कोसों दूर था। निर्मला के पति जब दफ्तर से आते तो वह मामूली-से-मामूली घटना की रिपोर्ट उन्हें देता। उसमें बनावटीपन बिल्कुल भी न था। निर्मला ने एक बार उससे पूछा कि क्या उसे अपनी माँ की याद आती है तो उसने कहा—''**नहीं आती।**'' निर्मला ने कारण जानना चाहा तो उसने बड़े भोलेपन से उत्तर दिया—''**वह मारती क्यों थी?**''

(3) हँसमुख और मृदुभाषी—बहादुर बहुत हँसमुख है। हर समय मुस्कराता रहता है। उसकी हँसी में कोमलता और मधुरता झलकती है। वह हँसता है तो लगता है मानो फूल झड़ रहे हों। उसकी बोली बहुत मधुर है। निर्मला के मुहल्ले के छोटे-छोटे लड़के उसे परेशान करते हैं। वे उससे अनेक प्रकार के प्रश्न पूछते हैं और गाने की फरमाइशें करते हैं। वह सबका उत्तर बड़े ही मीठे स्वर में और हँसकर देता है।

(4) ईमानदार और सच्चे हृदयवाला—बहादुर एक ईमानदार बालक है। यद्यपि वह गरीब है, तथापि वह बेईमानी से कोसों दूर है। वह जानता ही नहीं कि बेईमानी क्या होती है। जब कभी काम करते हुए उसे पैसे पड़े मिलते हैं, वह उठाकर तुरन्त निर्मला को दे देता है। उसके मन में पैसों का कोई लालच नहीं है। उस पर चोरी का झूठा आरोप लगाया गया, जिससे उसके मन को ठेस पहुँची। जब वह घर से गया तो कुछ भी साथ नहीं ले गया। यहाँ तक कि अपने पहनने के कपड़े, बिस्तर और जूते आदि सभी सामान वहीं छोड़ गया।

(5) सहनशील और स्वाभिमानी—बहादुर सहिष्णु है। घर में उसे सभी डाँटते हैं, लेकिन वह सब-कुछ सहन कर लेता है। यहाँ तक कि उसे निर्मला, निर्मला का पति और किशोर सब बुरी तरह पीटते हैं तो इस पिटाई को भी वह सहन करता है। गालियों की बौछारें होती हैं, उनका भी वह विरोध नहीं करता; लेकिन जब किशोर उसके बाप को गाली देता है तो उसका स्वाभिमान जाग उठता है और वह उसका काम करने से इनकार कर देता है। अपने पिता के प्रति गाली सुनकर वह रोने लगता है और कहता है—

''बाबूजी, भैया ने मेरे मरे बाप को क्यों लाकर खड़ा किया?''

'सूअर का बच्चा' गाली सुनकर मानो उसका अहम् जाग गया हो।

(6) मातृ-पितृभक्त बालक—बहादुर का हृदय मातृभक्ति और पितृभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। उसकी माँ उसे मारती है और उसकी उपेक्षा करती है। इसीलिए वह घर से भाग आया है और नौकरी कर रहा है। वह घर वापस भी नहीं जाना चाहता, लेकिन अपने वेतन के रुपये वह माँ के पास ही भेजना चाहता है। जब निर्मला उससे पूछती है कि तुम्हारी माँ तुम्हें मारती है तो तुम पैसा अपनी माँ के पास भेजने को क्यों कहते हो; तो उसका उत्तर है—

''माँ-बाप का कर्जा तो जन्मभर भरा जाता है।''

ऐसा है यह मातृभक्त बालक, जिसके हृदय में माँ के प्रति अपार श्रद्धा है।

(7) स्नेही बालक—निर्मला बहादुर के खाने और नाश्ते का बहुत ध्यान रखती है तथा उसके लिए कपड़े सिलवाती है। बहादुर को उसमें अपनी माँ की छवि दिखाई देती है, इसीलिए वह निर्मला के आराम का बहुत ध्यान रखता है। निर्मला के स्वास्थ्य की उसे बेहद चिन्ता रहती है। वह सारे दिन काम में जुटा रहता; क्योंकि वह उस घर से और उस घर के प्रत्येक सदस्य से प्यार करता है और उनकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखता है।

(8) व्यवहारकुशल—बहादुर एक व्यवहारकुशल बालक है। अपने इसी गुण के कारण अल्प समय में ही वह घर के सभी सदस्यों पर जादू का-सा प्रभाव डाल देता है। घर के प्रत्येक सदस्य के प्रति उसका बड़ा ही मृदु व्यवहार है। मुहल्ले के बच्चों को भी वह अपने गाने सुनाकर मोहित कर लेता है।

इस प्रकार बहादुर पाठक के हृदयपटल पर एक ऐसा चित्र अंकित करता है, जिससे उसे सहानुभूति मिल सके और वह अपने इस प्रयास में सफल भी हुआ है। यही कारण है कि पाठक चाहते हुए भी उसे नहीं भूल सकता।

© CHITRA PRAKASHAN

अथवा

'कर्मनाशा की हार' कहानी के प्रमुख पात्र भैरो पाण्डे का चरित्र-चित्रण

'कर्मनाशा की हार' कहानी के आधार पर भैरो पाण्डे के चरित्र में निम्नांकित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं—

(1) कर्त्तव्यनिष्ठ एवं आदर्शवादी—भैरो पाण्डे पुरानी पीढ़ी के आदर्शवादी व्यक्ति हैं। पैर से पंगु होते हुए भी उनकी क्रियाशीलता किसी से कम नहीं। भैरो पाण्डे सारे दिन काम में लगे रहकर जो कुछ कमाते हैं, अपने भाई की शिक्षा आदि पर खर्च कर देते हैं।

(2) विचारशील—भैरो पाण्डे गम्भीर, सच्चरित्र और विचारशील व्यक्तित्व के धनी हैं। फुलमत और अपने भाई कुलदीप के परस्पर टकरा जाने पर उन्होंने इतनी तीखी दृष्टि से दोनों को देखा था कि दोनों ही भय से काँपकर इधर-उधर भाग खड़े हुए।

(3) आदर्श भाई—भैरो पाण्डे को अपने भाई के प्रति अपार स्नेह था। जब कुलदीप केवल दो वर्ष का था कि माँ-बाप की मृत्यु हो गई और दुधमुँहे भाई की देख-रेख का भार उनके कन्धों पर आ गया। उन्होंने बहुत प्यार से कुलदीप का पालन-पोषण किया।

फुलमत से प्रेम हो जाने के बाद कुलदीप भैरो पाण्डे से भयभीत होकर कहीं भाग गया। ऐसी स्थिति में पाण्डे के हृदय में उसके प्रति आक्रोश तो है, परन्तु दुःख के सागर में डूबकर भी वे कुलदीप के सम्बन्ध में ही सोचते हैं—**'राम जाने कैसे हो' सूखी आँखों से दो बूँदें गिर पड़ीं, 'अपने से तो कौर भी नहीं उठ पाता था, भूखा बैठा होगा कहीं, बैठे—मरे, हम क्या करें।'**

(4) मानवतावादी व्यक्तित्व—पाण्डे मानवतावादी और मर्यादावादी भावनाओं से परिपूर्ण हैं। एक ओर उनमें मर्यादा की रक्षा हेतु उत्पन्न होनेवाली भावनाएँ फुलमत को अपने वंश का अंग बनने से रोकती हैं तो दूसरी ओर मानवतावादी दृष्टि उसे अपना लेने के लिए प्रेरित करती है। अन्त में मर्यादा-भाव पर मानवतावादी भाव विजयी हो जाता है। तब वे कह उठते हैं—"......... **कुलदीप कायर हो सकता है, वह अपने बहू-बच्चे को छोड़कर भाग सकता है, किन्तु मैं कायर नहीं हूँ; मेरे जीते-जी बच्चे और उसकी माँ का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता .... समझे।"**

और वे इसी के साथ फुलमत को स्वीकार कर लेते हैं।

(5) साहसी एवं निर्भीक—पाण्डे साहसी और निर्भीक विचारों के व्यक्ति हैं। मुखिया के द्वारा यह कहे जाने पर कि समाज का दण्ड तो झेलना ही होगा, पाण्डे भयभीत नहीं होते। वह बड़े साहस और निर्भीकता के साथ कहते हैं—"**जरूर भोगना होगा मुखियाजी .... मैं आपके समाज को कर्मनाशा से कम नहीं समझता। किन्तु मैं एक-एक के पाप गिनाने लगूँ, तो यहाँ खड़े सारे लोगों को परिवार समेत कर्मनाशा के पेट में जाना पड़ेगा .... है कोई तैयार जाने को .... ?"**

(6) प्रगतिशील—पाण्डे प्रगतिशील विचारों के पोषक हैं; अतः वे अन्धविश्वासों का खण्डन करते हुए रूढ़िवादिता का विरोध करने को तत्पर हो जाते हैं। वह स्पष्ट शब्दों में घोषणा करते हैं—"....... **कर्मनाशा की बाढ़ दुधमुँहे बच्चे और एक अबला की बलि देने से नहीं रुकेगी, उसके लिए तुम्हें पसीना बहाकर बाँधों को ठीक करना होगा .... ।"**

इस प्रकार कहानीकार ने भैरो पाण्डे को आदर्शवादी, मानवतावादी, गम्भीर, सच्चरित्र, विचारशील, साहसी और निर्भीक व्यक्ति के रूप में चित्रित कर रूढ़िवादिता को समाप्त करने का सन्देश दिया है।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के प्रश्न का उत्तर दीजिए— 5

(i) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा

पाण्डवों की एक वर्ष के अज्ञातवास की अवधि समाप्त हो गई। उन्होंने दुर्योधन से अपना राज्य वापस लौटाने को कहा, परन्तु उसने पाण्डवों को सूई की नोक के बराबर भूमि भी देने से मना कर दिया। दुर्योधन को समझाने के लिए श्रीकृष्ण राजसभा में पहुँचे। श्रीकृष्ण की बात न मानकर दुर्योधन ने उन्हें कैद करने का प्रयास किया, किन्तु श्रीकृष्ण ने अपना विराट् रूप दिखाकर उसे भयभीत कर दिया। जब कौरवों की राजसभा से लौटकर श्रीकृष्ण पाण्डवों के पास जा रहे थे, तभी मार्ग में उनकी भेंट कर्ण से हुई। श्रीकृष्ण ने उसके जन्म का इतिवृत्त बताते हुए उसे पाण्डवों का बड़ा भाई बताया तथा युद्ध की भीषणता एवं उसके दुष्परिणाम भी समझाए, परन्तु कर्ण इन चालों में नहीं आया। उसने श्रीकृष्ण से नम्रतापूर्वक कहा कि वह युद्ध में पाण्डवों की ओर से सम्मिलित नहीं होगा।

अथवा

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर :

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक कर्ण का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) सामाजिक विडम्बना का शिकार—कर्ण यद्यपि क्षत्रिय कुल से सम्बन्धित है, तथापि उसका पालन-पोषण सूत-परिवार में होने के कारण वह सामाजिक दृष्टि से हीन माना जाता है और उसे कदम-कदम पर अपमानित होना पड़ता है। अर्जुन को रंगशाला में द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारनेवाले कर्ण को कृपाचार्य की कूटनीतियों का शिकार होना पड़ता है और द्रौपदी-स्वयंवर में भी उसे अपमान का घूँट पीना पड़ता है।

(2) सच्चा मित्र—कर्ण दुर्योधन का सच्चा मित्र है। वह दुर्योधन के प्रति पूर्णतः कृतज्ञ है। वह श्रीकृष्ण और कुन्ती के प्रलोभनों में नहीं आता। वह स्पष्ट कह देता है कि मैं दुर्योधन को किसी भी दशा में नहीं छोड़ सकता। वह तो दुर्योधन पर सबकुछ न्योछावर करने को तत्पर रहता है—

मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब इसे तोल सकता है धन?
धरती की तो क्या है बिसात?
आ जाय अगर बैकुण्ठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ,
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।

(3) साहसी और वीर धनुर्धर—कर्ण साहसी, वीर और पराक्रमी धनुर्धर है। वह सामाजिक प्रताड़नाओं एवं बहिष्कारों को सहकर भी न तो किसी के आगे झुका है, न उसने हार मानी है। वह पूर्ण शक्ति से अपना युद्ध-कौशल दिखाता है। उसे अपने भुजबल में पूर्ण विश्वास है; यथा—

"पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से।"

(4) महादानी एवं धर्मनिष्ठ—कर्ण किसी भी याचक को अपने यहाँ से खाली हाथ नहीं लौटने देता है। यहाँ तक कि ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को वह अपने कवच-कुण्डल भी दे देता है। ये उसकी धर्मनिष्ठता, दानप्रियता एवं दृढ़ता के प्रतीक हैं। उसके विषय में प्रसिद्ध था—

रवि पूजन के समय सामने जो याचक आता था,
मुँहमाँगा वह दान कर्ण से अनायास पाता था।

(5) जाति-प्रथा के विरुद्ध विद्रोह—कर्ण जाति-प्रथा और वर्णाश्रम-व्यवस्था से बहुत ही क्षुब्ध था; क्योंकि इन्हीं के आधार पर उसे पग-पग पर प्रताड़ित किया गया था। वह मानता है—

ऊपर सिर पर कनक छत्र, भीतर काले के काले,
शरमाते हैं नहीं जगत में जाति पूछने वाले।

(6) जन्मदात्री माँ के प्रति क्षुब्ध और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त—जन्म देकर ईश्वर की कृपा और समाज की उपेक्षा पर जीने के लिए छोड़ देनेवाली माँ के प्रति उसके मन में वितृष्णा है; क्योंकि कर्ण को समाज में पग-पग पर अपमानित होना पड़ता है और यही उसके मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का कारण भी है। उसका क्षोभ और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व निम्नलिखित पंक्तियों से स्पष्ट झलकता है—

जो जनकर पत्थर हुई जाति के भय से,
सम्बन्ध तोड़ भागी दुधमुँहे तनय से।
मर गई नहीं वह स्वयं मार सुत को ही,
जीना चाहा बन कठिन क्रूर निर्मोही।

© CHITRA PRAKASHAN

क्या कहूँ देवि! मैं तो ठहरा अनचाहा,
पर, तुमने माँ का खूब चरित्र निबाहा।

(7) अडिग निष्ठा/सच्चा गुरुभक्त—कर्ण अपने गुरु परशुराम की निन्दा को नहीं सुन सकता। गुरु के शाप को भी वह बड़ी श्रद्धा से स्वीकार करता है—

''छूकर उनका चरण कर्ण ने अर्घ्य अश्रु का दान किया।''

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कर्ण का चरित्र दिव्य एवं उच्च संस्कारों से युक्त है, जो मानवता का पोषक है। संघर्षों के मध्य वह मित्रता की आन को निभाता है। वास्तव में उसके चरित्र में सच्ची मैत्री की अडिग निष्ठा विद्यमान है।

(ii) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु

सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित **'मुक्तियज्ञ'** खण्डकाव्य में सन् 1921 ई० से सन् 1947 ई० तक के मध्य घटित ऐतिहासिक भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं और राष्ट्रीय एवं देशभक्ति की भावनाओं को चित्रित किया गया है।

अंग्रेज शासकों ने नमक पर कर बढ़ा दिया था। महात्मा गांधी ने उसका डटकर विरोध किया। गांधीजी ने नमक कानून तोड़ने व सत्याग्रह के लिए साबरमती आश्रम से 240 मील की दूरी पर समुद्र-तट पर स्थित 'डाण्डी' ग्राम को चुना। वहाँ पहुँचकर उन्होंने समुद्र के पास से नमक उठाकर 'नमक कानून' भंग किया। गांधीजी का उद्देश्य नमक बनाना नहीं था, वे तो इस कानून का विरोध और जनता में चेतना उत्पन्न करना चाहते थे। वे शासन का विरोध करके भारतीयों का आह्वान स्वतन्त्रता-प्राप्ति के महान् यज्ञ हेतु करना चाहते थे।

गांधीजी ने जन-जागरण के उद्देश्य से 'डाण्डी' ग्राम तक पैदल जाने का निश्चय किया। वे 24 दिन की पैदल यात्रा के बाद 'डाण्डी' ग्राम पहुँचे—

वह चौबीस दिनों का पथ व्रत,
दो सौ मील किए पद पावन।
स्थल-स्थल पर रुक, पा जन पूजन,
दिया दीप्त सत्याग्रह दर्शन!

गांधीजी का यह कार्य 'डाण्डी-यात्रा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गांधीजी का डाण्डी-सत्याग्रह सफल हुआ और अंग्रेज शासकों को नमक कानून हटाना पड़ा। गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के प्रभाव को जान चुके थे; अत: वे भारतीयों को भी परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए मसीहा बनकर आए। वे सत्य और अहिंसा की शक्ति को बड़ी प्रभावी शक्ति मानते थे और भारतीयों को भी इसी शक्ति का परिचय देना चाहते थे।

गांधीजी के सत्याग्रह से अंग्रेज शासक क्षुब्ध हो गए और उन्होंने भारतीयों पर दमन-चक्र चलाना प्रारम्भ कर दिया। इसके विरोध में भारतीयों द्वारा जेलें भरी जाने लगीं। गांधीजी को भी जेल में डाल दिया गया। जैसे-जैसे दमनचक्र बढ़ता गया वैसे-वैसे ही मुक्ति यज्ञ भी तीव्र होता गया। गांधीजी ने भारतीयों को स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार गांधीजी ने भारतीयों में एक अपूर्व उत्साह एवं जागृति उत्पन्न कर दी।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीयों ने अंग्रेजों से संघर्ष का निर्णय लिया। संघर्ष बढ़ता गया। सन् 1927 ई० में भारत में साइमन कमीशन आया। भारतीयों ने इसका पूर्ण बहिष्कार किया। साइमन कमीशन को वापस जाना पड़ा। इसके उपरान्त भारत में स्थान-स्थान पर 'अंग्रेजो! भारत छोड़ो' का नारा सुनाई पड़ने लगा। अब गांधीजी पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते थे। अंग्रेजों ने 'फूट डालो' की नीति को अपनाकर 'मुस्लिम लीग' की स्थापना करा दी और हिन्दू-मुसलमानों को संघर्ष के रास्ते पर खड़ा कर दिया। गांधीजी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए अनशन किया और अनशन तभी तोड़ा, जब उन्हें यह विश्वास दिलाया गया कि यह एकता बनाए रखी जाएगी।

सन् 1942 ई० में भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की गई। अंग्रेजों के प्रोत्साहन से मुस्लिम लीग ने भारत-विभाजन की माँग की। सन् 1947 ई० में भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा की गई। इधर मुस्लिम लीग के भड़काने से हिन्दू-मुस्लिम दंगे शुरू हो गए। यह देखकर महात्मा गांधी बहुत दु:खी हुए। जिस समय देश में स्वतन्त्रता की खुशियाँ मनाई जा रही थीं, उस समय महात्मा गांधी मौन व्रत धारण किए हुए थे। वे चाहते थे कि हिन्दू-मुस्लिम पारस्परिक वैर को त्यागकर सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि नैतिक गुणों को अपनाएँ और भाईचारे से रहें।

इस प्रकार 'मुक्तियज्ञ' देशभक्ति से परिपूर्ण गांधी युग के स्वर्णिम इतिहास का काव्यात्मक आलेख है। इसमें उस युग का इतिहास अंकित है, जब भारत में सर्वत्र हलचल मची हुई थी और सम्पूर्ण देश में क्रान्ति की आग सुलग रही थी। सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, भाईचारा, त्याग, सहिष्णुता और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी महान् मानकर उसके लिए प्राण न्योछावर कर देना सदैव से भारतीय समाज के उच्चादर्श रहे हैं और कविवर पन्त ने महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व के माध्यम से इन सभी आदर्शों की स्थापना का सफल प्रयास किया है।

अथवा

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गांधी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण

(1) सत्य-अहिंसा के पुजारी—महात्मा गांधी ने संसार के सम्मुख सत्य और अहिंसा का अभिनव प्रयोग किया। उनका दृढ़-विश्वास था कि बिना रक्तपात के भी स्वतन्त्रता देवी का स्वागत किया जा सकता है। इसके बल पर ही उन्होंने भारत से शक्तिशाली ब्रिटिश सत्ता के पैर उखाड़ दिए। सत्य और अहिंसा का प्रयोग उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध ही नहीं किया, अपितु इन सिद्धान्तों को अपने व्यक्तिगत जीवन में भी अक्षरश: उतारा।

(2) साहसी एवं दृढ़निश्चयी—महात्मा गांधी अपने निश्चय पर दृढ़ रहनेवाले एवं साहसी व्यक्ति थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के नमक कानून को तोड़ने हेतु अपने अद्भुत साहस का प्रदर्शन किया। वे अंग्रेजी सत्ता के क्रूर दमन-चक्र से तनिक भी विचलित नहीं हुए—

वीरोचित वर आवेशों से
सुलग रहा था बापू का मन!

'डाण्डी-यात्रा' के समय उनके दृढ़-निश्चय एवं अपूर्व साहस के दर्शन होते हैं—

प्राण त्याग दूँगा पथ पर ही,
उठा सका मैं यदि न नमक कर।
लौट न आश्रम में जाऊँगा,
जो स्वराज्य ला सका नहीं घर।

(3) महान् जननायक—गांधीजी भारतीय जनता के सच्चे नेता थे। उनका भारतीय जनता के हृदय पर पूर्ण राज्य था। भारत की जनता ने उनके नेतृत्व में ही स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी और अंग्रेजों को यहाँ से भगाकर ही दम लिया—

लोक प्रगति का देवदूत वह,
तीस कोटि का रहा कृतीजन।
विश्व चमत्कृत सोच रहा था,
क्या भारत की सिद्धि साध्य धन?

(4) मानवीय गुणों से युक्त—गांधीजी में दया, करुणा, त्याग, इन्द्रिय-संयम, मानवता के प्रति प्रेम, विश्व-बन्धुत्व एवं वीरता के गुण कूट-कूटकर भरे हुए थे—

लिए अहिंसा युग के तन वह
खड़े सत्य वट नीचे निर्भय
स्फटिक शुभ्र स्वर में पुकारते
चलता धरती पर अरुणोदय।

(5) समदर्शी—गांधीजी की दृष्टि में न कोई छोटा था, न अस्पृश्य और न ही तुच्छ। वे सभी को समान दृष्टि से देखते थे। अस्पृश्यता के निवारण हेतु उन्होंने आन्दोलन भी चलाया—

© CHITRA PRAKASHAN

छुआछूत का भूत भगाने
किया व्रती ने दृढ़ आन्दोलन,
हिले द्विजों के रुद्ध हृदय पट,
खुले मन्दिरों के जड़ प्रांगण।

(6) अहिंसक मानवतावादी—'मुक्तियज्ञ' के गांधी अहिंसक मानवतावादी थे। उनका विश्वास था कि हिंसा से हिंसा और घृणा से घृणा पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। वे परस्पर प्रेम उत्पन्न कर इस घृणा एवं हिंसा को दूर करना चाहते थे। वे हिंसा का प्रयोग करके स्वतन्त्रता भी नहीं चाहते थे; क्योंकि उन्हें सन्देह था कि ऐसी स्वतन्त्र भूमि मानवता से रहित होगी—

घृणा, घृणा से नहीं मरेगी,
बल प्रयोग पशु साधन निर्दय।
हिंसा पर निर्मित भू-संस्कृति,
मानवीय होगी न, मुझे भय।

महात्मा गांधी महान् राष्ट्रनायक, स्वतन्त्रता के पुजारी, सत्य और अहिंसा की मूर्ति, निर्भीक, साहसी, दृढ़प्रतिज्ञ एवं संयमी व्यक्ति थे। प्रस्तुत खण्डकाव्य के गांधीजी के व्यक्तित्व से सम्बन्धित गुणों की तुलना उनके परम्परागत मान्य स्वरूप से करने पर ज्ञात होता है कि उनमें सभी लोक-कल्याणकारी गुणों का समावेश करते हुए कवि ने उनके चरित्र को एक नया स्वरूप प्रदान किया है, जो अधिक प्रखर एवं प्रकाशवान् है।

(iii) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर :

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना (द्रौपदी-चीर-हरण)

प्रस्तुत खण्डकाव्य 'महाभारत' के द्रौपदी-चीर-हरण की अत्यन्त संक्षिप्त; किन्तु मार्मिक घटना पर आधारित है। इस घटना ने अनेक कवियों के मानस को छुआ है और अनेक काव्यों को जन्म दिया है। उन रचनाओं की अपेक्षा इस रचना की कथावस्तु की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे कवि ने संवाद-शैली में गूँथकर अनुपम नाटकीय और चित्रोपम सौन्दर्य प्रदान किया है। इस कारण इसमें एकांकी नाटक की श्रव्य और दृश्य दोनों विशेषताएँ आ गई हैं। इस खण्डकाव्य में कवि ने द्रौपदी के चीर-हरण की पौराणिक घटना के लघु आधार पर ऐसी विशद वस्तु-योजना की है, जिसकी सीमा में महाभारत युग के साथ वर्तमान युग भी बोल उठा है। दुर्योधन पाण्डवों को द्यूतक्रीडा के लिए आमन्त्रित करता है और क्रीडा आरम्भ होने पर छल-प्रपंच से उनका सबकुछ छीन लेता है। युधिष्ठिर द्यूत में स्वयं को भी हार जाते हैं। अन्त में वह द्रौपदी को दाँव पर लगाते हैं और हार जाते हैं।

अथवा

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की नायिका का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर :

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की नायिका द्रौपदी का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर द्रौपदी की चरित्रगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) स्वाभिमानिनी—द्रौपदी एक वीरांगना है; अत: उसमें स्वाभिमान की उदात्त भावना का होना स्वाभाविक है। उसे अपमान सह्य नहीं है। वह नारी के स्वाभिमान को ठेस पहुँचानेवाली किसी भी बात को मानने के लिए तैयार नहीं है। अपने स्वाभिमान के कारण ही अपनी रक्षा के लिए वह स्वयं को समर्थ मानती है। वह दु:शासन को ललकारती हुई कहती है—

मौन हो जा, मैं सह सकती न
कभी भी नारी का अपमान।

(2) सत्यनिष्ठ एवं न्यायप्रिय—द्रौपदी सत्य और न्याय के प्रति पूर्णत: निष्ठावान् है। वह अपने प्राण देकर भी न्याय और सत्य का पालन करने की पक्षधर है। जब दु:शासन पाशविक बल का प्रदर्शन कर द्रौपदी के सत्य एवं शील का हरण करना चाहता है तो वह दु:शासन को ललकारती हुई कहती है—

न्याय में रहा मुझे विश्वास,
सत्य में शक्ति अनन्त महान।
मानती आई हूँ मैं सतत,
''सत्य ही है ईश्वर, भगवान्।।''

(3) वाक्पटु—द्रौपदी के कथन उसकी वाक्पटु एवं योग्यता के परिचायक हैं। चीर-हरण के समय कौरवों की सभा में वह अकाट्य तर्क प्रस्तुत करके सभी सभासदों को निरुत्तर कर देती है। वह दु:शासन से न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म आदि पर विवाद करती है। उसके वाक्चातुर्य का एक उदाहरण देखिए—

पूछती हूँ मैं केवल एक प्रश्न, उसका उत्तर मिल जाय।
करूँगी फिर जो हो आदेश, बड़ों का वचन मानकर न्याय।।
प्रथम महाराज युधिष्ठिर मुझे, या कि थे गए स्वयं को हार।
स्वयं को यदि, तो उनको मुझे, हारने का था क्या अधिकार?

(4) नारी-जाति का आदर्श—द्रौपदी सम्पूर्ण नारी-जाति के लिए एक आदर्श है। दु:शासन नारी को केवल वासना एवं भोग की वस्तु कहता है तो वह बताती है कि नारी वह शक्ति है, जो विशाल चट्टान को भी हिला देती है। यद्यपि वह कली के समान कोमल है, परन्तु पापियों के संहार के लिए वह भैरवी भी बन सकती है। वह नारी-जाति के लिए गौरव की घोषणा करती है—

पुरुष के पौरुष से ही सिर्फ,
बनेगी धरा नहीं यह स्वर्ग।
चाहिए नारी का नारीत्व,
तभी होगा यह पूरा सर्ग।।

(5) निर्भीक एवं साहसी—द्रौपदी के बाल खींचकर दु:शासन उसे भरी सभा में ले आता है और उसे अपमानित करना चाहता है, परन्तु द्रौपदी बड़े साहस एवं निर्भीकता के साथ दु:शासन को निर्लज्ज और पापी कहकर पुकारती है—

अरे ओ ! दु:शासन निर्लज्ज !
देख तू नारी का भी क्रोध।
किसे कहते उसका अपमान
कराऊँगी मैं इसका बोध।।

(6) सती-साध्वी धर्मनिष्ठ नारी—कवि ने द्रौपदी के चरित्र को एक भारतीय सती-साध्वी नारी के आदर्श चरित्र के रूप में चित्रित किया है, जो भारत-माता का प्रतीक है। कवि ने द्रौपदी के चरित्र के माध्यम से सत्य, न्याय, धर्म, विवेक, समता और समष्टि आदि मानवीय आदर्शों को भली प्रकार उजागर किया है। द्रौपदी के रूप में भारत-माता की प्रतिमा साकार हो उठी है। द्रौपदी के गुण, शील एवं धर्मनिष्ठा की प्रशंसा स्वयं धृतराष्ट्र को भी करनी पड़ती है—

द्रौपदी धर्मनिष्ठ है, सती-
साध्वी, सत्य-न्याय साकार।
इसी से आज सभी से प्राप्त
उसे बल, सहानुभूति अपार।।

सार रूप में कहा जा सकता है कि द्रौपदी पाण्डव-कुलवधू, वीरांगना, स्वाभिमानी, आत्मगौरव-सम्पन्न, सत्य और न्याय की पक्षधर, सती-साध्वी, नारीत्व के स्वाभिमान से मण्डित एवं नारी-जाति का आदर्श है।

(iv) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथा

गांधीजी अफ्रीका से भारत वापस आए और उन्होंने 'कलकत्ता कांग्रेस' में भाग लिया। वहाँ से उन्होंने देशबन्धु चितरंजनदास, पं० मोतीलाल नेहरू, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद एवं सरदार पटेल आदि नेताओं का आह्वान किया। गांधीजी के आह्वान पर देश के महान् नेता एकजुट होकर सत्याग्रह की तैयारी में जुट गए, फिर गांधीजी ने बिहार प्रान्त के चम्पारन क्षेत्र में नील की खेती को लेकर सत्याग्रह छेड़ा। उनके भाषण सुनकर विदेशी सरकार विषम स्थिति में पड़ गई। चम्पारन के आन्दोलन में सफल होकर उन्होंने खेड़ा में सत्याग्रह आन्दोलन छेड़ा। इस आन्दोलन में सरदार पटेल का व्यक्तित्व निखरकर सामने आया।

© CHITRA PRAKASHAN

अथवा

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक (महात्मा गांधी) के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण

गांधीजी के लोकनायक चरित्र की विशेषताओं को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

(1) देशप्रेमी—गांधीजी अपने देश (मातृभूमि) से इतना प्रेम करते थे कि उन्होंने अपना तन-मन-धन अर्थात् सर्वस्व देशोद्धार के लिए अर्पित कर दिया।

(2) सत्य और अहिंसा के उपासक—गांधीजी ने अपने जीवन में सत्य और अहिंसा को सर्वोपरि महत्त्व दिया। वे अहिंसा को महान् शक्तिशाली अस्त्र मानते रहे। अहिंसा व्रत का पूर्ण पालन कोई विरला व्यक्ति ही कर सकता है। उन्होंने अपने जीवन में हिंसा न करने का दृढ़-निश्चय किया—

मुँह से उफ तक किए बिना,
अधिकारों के हित अड़ना है।
नहीं आदमी से, उसकी
दुर्बलताओं से लड़ना है।

(3) पुरुषार्थ एवं ईश्वर के प्रति आस्थावान्—गांधीजी पुरुषार्थ को भाग्य से ऊपर मानते थे। उन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल पर ही ब्रिटिश राज्य की नींव हिला दी। वे ईश्वर के प्रति सदा आस्थावान् बने रहे। उन्होंने जो कुछ भी किया, ईश्वर को साक्षी मानकर ही किया। उनकी दृष्टि में साधन पवित्र होने चाहिए, परिणाम ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा—

क्या होगा परिणाम सोच लूँ ,
पर क्यों सोचूँ, वह तो।
मेरा क्षेत्र नहीं, स्त्रष्टा का,
जो प्रभु करे वही हो।।

(4) सदाचरण एवं मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठावान्—गांधीजी ने अपने जीवन में मानवीय मूल्यों एवं सदाचरण को सदैव बनाए रखा। उनके हृदय में मानवमात्र के प्रति ही नहीं, प्राणिमात्र के प्रति भी समभाव था। उनके अनुसार जाति, धर्म, वर्ण एवं रूप आदि के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। वे पाप से घृणा करने की बात कहते थे, पापी से नहीं।

(5) जनतन्त्र में आस्था—गांधीजी मानव-मानव में समता का भाव आवश्यक ही नहीं, वरन् अनिवार्य भी मानते थे। उनके अनुसार लोकतन्त्र (जनतन्त्र) ही मानव-भावना का सच्चा प्रतीक है तथा लोकतन्त्र में ही सभी के हित सुरक्षित रहते हैं। कवि कहता है—

लोकतन्त्र का रथ समता के पहियों पर चलता है।
मन्दिर कोई भी हो सब में, दीप वही जलता है।।

(6) राष्ट्रीय एकता के पक्षधर—गांधीजी ने भारत की समग्र जनता को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए जीवनपर्यन्त प्रयास किया।

(7) भावात्मक एकता से ओत-प्रोत—गांधीजी 'विश्वबन्धुत्व' एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत-प्रोत थे। वे सभी को सुखी व समृद्ध देखना चाहते थे।

(8) हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर—उन्होंने सारे जीवन हिन्दू और मुसलमानों को भाई-भाई की तरह रहने की प्रेरणा दी।

(9) हरिजनोद्धारक—अछूत कहे जानेवाले भारतीय भाइयों को उन्होंने गले लगाया और उनके उद्धार के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहे।

(10) स्वदेशी वस्तु एवं खादी को महत्त्व—गांधीजी ने स्वयं भी और अपने अनुयायियों को भी स्वदेशी वस्तुओं और खादी अपनाने की प्रेरणा दी—

खादी का प्रचार घर-घर में
अब थी यही लगन जीवन की।

(11) आत्मविश्वास के धनी—गांधीजी आत्मविश्वास से परिपूर्ण थे, उन्होंने जो कुछ भी किया, वह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ किया और उसमें वे सफल भी हुए।

(12) सत्याग्रही—गांधीजी ने सत्य के बल पर पूरा भरोसा किया और अपने सत्याग्रह के बल पर ही उन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़कर ब्रिटेन चले जाने के लिए बाध्य कर दिया।

अन्तत: सार रूप में कहा जा सकता है कि जितने भी मानवोचित गुण हो सकते हैं, वे सब पूज्य महात्मा गांधी में विद्यमान थे। उनके निर्मल चरित्र पर उँगली उठाने का साहस किसी में है ही नहीं। उनकी उपलब्धियों और राष्ट्रीय महत्त्व को यदि कवि के दृष्टिकोण से देखें तो कवि की ये पंक्तियाँ उनके विषय में बिल्कुल सटीक बैठती हैं—

महत्ता हम सबों की क्या भला थी,
सभी उस वृद्ध माँझी की कला थी।

(v) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग की कथावस्तु लिखिए।

उत्तर :

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग की कथावस्तु

इसमें हर्ष के त्यागी और व्रती जीवन का वर्णन किया गया है। हर्ष ने प्रयाग में त्रिवेणी-संगम पर त्याग-व्रत का महोत्सव मनाने का निश्चय किया। उन्होंने देश के सभी ब्राह्मणों, श्रमणों, भिक्षुओं, धार्मिक व्यक्तियों आदि को वहाँ आने के लिए निमन्त्रण दिया और अपने सम्पूर्ण संचित कोष को दान देने की घोषणा की—

हुई थी घोषणा सम्राट् की साम्राज्य-भर में,
करेंगे त्याग सारा कोष ले संकल्प कर में।

माघ के महीने में प्रयाग में त्रिवेणी-तट पर प्रतिवर्ष विशाल मेला लगता था और इस अवसर पर प्रति पाँचवें वर्ष हर्ष सर्वस्व दान कर देते थे तथा अपनी बहन राज्यश्री से माँगकर वस्त्र धारण करते थे। इस प्रकार वे एक साधारण व्यक्ति के रूप में ही अपनी राजधानी वापस लौटते थे।

इस प्रकार 'त्यागपथी' का कथानक अत्यन्त मार्मिक एवं प्रभावशाली है। सम्राट् हर्षवर्धन के माध्यम से कवि ने तत्कालीन श्रेष्ठ शासन का उल्लेख करते हुए भारतीय धर्म, संस्कृति और समाज की उन्नति का सशक्त रूप में वर्णन किया है। अन्तत: कवि ने यही सन्देश दिया है—

भूले सभी कर्त्तव्य वही बड़ा, जो निज देश की रक्षा सिखाए।
धर्म बड़ा सबसे वही, एकता का जो सदा विश्वास जगाए।
नीति वही सबसे बड़ी, जो सबमें सद्भावना, प्रेम बढ़ाए।
त्याग बड़ा वही है जिसमें अपने को स्वयं नर भूलता जाए।

अथवा

'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख स्त्री पात्र (राज्यश्री) के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

'त्यागपथी' खण्डकाव्य की स्त्री पात्र राज्यश्री का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर राज्यश्री के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) आदर्श नारी—राज्यश्री आदर्श पुत्री, बहन एवं पत्नी के रूप में हमारे सम्मुख आती है। माता-पिता की यह लाड़ली बेटी जब विधवा होती है तो कैद कर ली जाती है, परन्तु भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के समाचार से पीड़ित होकर कैदखाने से भाग निकलती है। वन में भटकती हुई वह अग्नि-प्रवेश को उद्यत होती है, परन्तु शीघ्र ही भाई हर्ष द्वारा आकर बचा ली जाती है। भाई हर्ष द्वारा बाद में राज्य सौंपे जाने पर भी वह उस राज्य को स्वीकार नहीं करती और तन-मन से प्रजा की सेवा में लग जाती है। यही है उसका आदर्श रूप, जो सबको आकर्षित कर लेनेवाला है—

विपुल साम्राज्य की अग्रज सहित वह शासिका थी,
अभ्यन्तर से तथागत की अनन्य उपासिका थी।

(2) धर्मपरायणा एवं त्यागी-तपस्विनी—तथागत (बुद्ध) की सुपावन प्रेरणा प्राप्त करके राज्यश्री अपने मन, वचन और आत्मा से उनकी शरण में चली जाती है। उसने राज्य-वैभव का परित्याग करके कठोर संयम एवं नियम का मार्ग स्वीकार कर लिया है। इस सन्दर्भ में कवि कहता है—

नहीं कम राज्यश्री है आज आश्रमवासिनी से,
नहीं है त्याग उसका कम किसी संन्यासिनी से।

© CHITRA PRAKASHAN

माघ-मेले में प्रत्येक पाँचवें वर्ष वह सर्वस्व दान देती है—

लुटाती थी बहन भी पास का सब तीर्थ-स्थल में,
पहिन दो वस्त्र केवल दीपती थी छवि विमल में।

(3) देशभक्त एवं जनसेविका—राज्यश्री जनसेवा का व्रत लेती है और इस व्रत को पूर्ण करके वह अपनी देशभक्ति का परिचय देती है। वह प्रतिज्ञा करती है कि अपने भाई हर्ष के साथ वह भी सदा देशसेवा में लगी रहेगी—

''करूँगी साथ उनके मैं हमेशा राष्ट्र-साधन।''

(4) सुशिक्षिता एवं शास्त्र-ज्ञान से सम्पन्न—राज्यश्री सुशिक्षिता एवं शास्त्रों के ज्ञान से सम्पन्न है। आचार्य दिवाकर मित्र संन्यास-धर्म का तात्त्विक विवेचन करते हुए उसे मानव-कल्याण के कार्यों में लगने का उपदेश देते हैं। राज्यश्री इसे स्वीकार कर लेती है और आचार्य की आज्ञा का पूर्णरूपेण पालन करती है।

इस प्रकार राज्यश्री एक ऐसी आदर्श भारतीय नारी है, जो त्याग, तपस्या, कर्त्तव्यनिष्ठा, धर्मपरायणता और जनसेवा जैसे पवित्र भावों से सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

कवि ने 'त्यागपथी' की भूमिका में स्पष्ट लिखा है—**''राज्यश्री एक आदर्श राजकुमारी थी, जिसने पूर्ण पवित्रता और सात्त्विकता के साथ अपना जीवन बिताया। ....खण्डकाव्य में हर्ष के समानान्तर ही राज्यश्री का विमल चरित्र भी उन सब आदर्शों से अनुप्रेरित होकर चित्रित हुआ है।''**

(vi) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु

डॉ० शिवबालक शुक्ल द्वारा रचित खण्डकाव्य '**श्रवण कुमार**' में नौ सर्ग हैं—**प्रथम सर्ग :** अयोध्या, **द्वितीय सर्ग :** आश्रम, **तृतीय सर्ग :** आखेट, **चतुर्थ सर्ग :** श्रवण, **पंचम सर्ग :** दशरथ, **षष्ठ सर्ग :** सन्देश, **सप्तम सर्ग :** अभिशाप, **अष्टम सर्ग :** निर्वाण, **नवम सर्ग :** उपसंहार। इनमें से प्रमुख सर्गों का सारांश इस प्रकार है—

प्रथम सर्ग : अयोध्या

अयोध्या का गौरवशाली इतिहास अपने भीतर अनेक महान् राजाओं की गौरवगाथा छिपाए हुए है। पृथु, इक्ष्वाकु, ध्रुव, सगर, दिलीप, रघु आदि राजाओं ने अयोध्या के नाम को प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा के शिखर पर पहुँचाया। इसी अयोध्या में सत्यवादी हरिश्चन्द्र और गंगा को भूतल पर लानेवाले राजा भगीरथ ने शासन किया। राजा रघु के नाम पर ही इस कुल का नाम रघुवंश पड़ा। महाराजा दशरथ राजा अज के पुत्र थे।

राजा दशरथ अयोध्या के प्रतापी शासक थे। उनके राज्य में सर्वत्र शान्ति थी। वहाँ कोई भी दुष्ट, पापी व नीच नहीं था। अयोध्या नगरी में चारों ओर कला-कौशल, उपासना-संयम तथा धर्म-साधना का साम्राज्य था। श्रमिकों को उचित वेतन मिलता था। सभी वर्ग सन्तुष्ट थे। महाराज दशरथ स्वयं एक महान् धनुर्धर थे। वे शब्दभेदी बाण चलाने में सिद्धहस्त थे।

द्वितीय सर्ग : आश्रम

सरयू नदी के तट पर एक आश्रम था। उस आश्रम में श्रवण कुमार अपने वृद्ध एवं अन्धे माता-पिता के साथ सुख-शान्तिपूर्वक निवास करता था। आश्रम में रहनेवाले अन्धे मुनि और उनकी पत्नी श्रवण जैसा आज्ञाकारी और मातृ-पितृभक्त पुत्र पाकर अपने को धन्य मानते थे। उनकी तपस्या के प्रभाव से हिंसक पशु भी अपनी हिंसा भूल गए थे।

तृतीय सर्ग : आखेट

एक दिन गोधूलि वेला में महाराज दशरथ भोजन करने के बाद विश्राम कर रहे थे कि उनके मन में आखेट की इच्छा जाग्रत हुई। उन्होंने अपने सारथि को बुला भेजा और रात्रि के चतुर्थ पहर में आखेट हेतु प्रस्थान करने की इच्छा प्रकट की। रात्रि में सोते समय राजा ने स्वप्न में देखा था कि एक हिरन का बच्चा उनके बाण से मर गया है और हिरनी खड़ी हुई आँसू बहा रही है।

राजा दशरथ सूर्योदय से बहुत पहले ही रथ पर सवार होकर शिकार के लिए चल दिए। वे शीघ्र ही अपने इच्छित स्थान पर पहुँच गए। रथ से उतरकर वे घने वन में एक अन्धकारमय स्थान पर छिपकर बैठ गए। धनुष-बाण सँभाले हुए वे किसी वन्य पशु की प्रतीक्षा करने लगे।

इधर श्रवण कुमार के माता-पिता को प्यास लगी। उन्होंने श्रवण कुमार से जल लाने को कहा। श्रवण जल लेने के लिए नदी के तट पर गया और जल भरने के लिए कलश को नदी के जल में डुबोया। घड़े के शब्द को राजा दशरथ ने किसी वन्य पशु की आवाज समझा। उन्होंने तुरन्त शब्दभेदी बाण चला दिया। बाण श्रवण कुमार को लगा। श्रवण कुमार चीत्कार करता हुआ धरती पर गिर पड़ा। मानव-स्वर सुनकर राजा दशरथ चिन्तित हो उठे और 'प्रभु कल्याण कर' कहते हुए नदी के किनारे पर पहुँचे।

चतुर्थ सर्ग : श्रवण

राजा दशरथ के बाण से घायल हुआ श्रवण कुमार नदी के तट पर पड़ा था। वह अपने माता-पिता की चिन्ता में व्याकुल था और बिलख-बिलखकर कह रहा था कि अब मेरे असहाय अन्धे माता-पिता का भविष्य क्या होगा।

श्रवण ने दु:खी मन से राजा से कहा कि उन्होंने श्रवण को ही नहीं मारा है; अपितु उसके माता-पिता की भी हत्या कर दी है। उसके माता-पिता अन्धे हैं और वे उसके बिना जीवित नहीं रह सकते। उसने राजा से आग्रह किया कि वे उसके माता-पिता को जल पिला आएँ। राजा अपनी भूल के कारण आत्मग्लानि से भर उठे। माता-पिता को जल पिलाने का आग्रह करके श्रवण के प्राण-पखेरू उड़ गए। राजा दशरथ बहुत दु:खी हुए। उन्होंने अपने सारथि को तो श्रवण के पास छोड़ा और स्वयं जल लेकर श्रवण के माता-पिता के पास गए।

पंचम सर्ग : दशरथ

दशरथ दु:खी एवं चिन्तित भाव में सिर झुकाए आश्रम की ओर जा रहे थे और सोच रहे थे कि इस घटना के कारण हृदय पर लगे घाव का प्रायश्चित्त वे किस प्रकार करें। इस सम्पूर्ण सर्ग में दशरथ के आन्तरिक द्वन्द्व का चित्रण हुआ है। पश्चात्ताप, आशंका, भय, करुणा आदि से भरे हुए वे आश्रम में पहुँचते हैं।

षष्ठ सर्ग : सन्देश

आश्रम में श्रवण के प्यासे माता-पिता श्रवण के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनका मन बार-बार शंका से भर जाता था कि इतनी देर होने पर भी श्रवण अभी तक लौटकर क्यों नहीं आया। उसी समय दशरथ ने आश्रम में प्रवेश किया। दशरथ के पैरों की आहट पाकर श्रवण के पिता कह उठे—

'कहाँ पुत्र थे? मेरी लकुटी, वाहन मेरे, मेरी आँख?'

वे दोनों राजा दशरथ को ही श्रवण समझ रहे थे। जब दशरथ ने कहा, ''कृपया जल लीजिए'' तो उनका भ्रम दूर हुआ। उन्होंने दशरथ का स्वागत किया और उनका परिचय पूछा। दशरथ ने अपना परिचय 'अजनन्दन' बताकर दिया। उसके उपरान्त दशरथ ने अपने द्वारा बाण चलाए जाने, श्रवण के स्वर्गवासी हो जाने और स्वयं जल लेकर आने की बात बताई। श्रवण की मृत्यु का समाचार सुनकर श्रवण के वृद्ध माता-पिता व्याकुल हो उठे। श्रवण कुमार के पास पहुँचने की इच्छा व्यक्त करते हुए वे विलाप करने लगे।

सप्तम सर्ग : अभिशाप

श्रवण के माता पिता पुत्र-शोक से व्याकुल थे। वे करुण विलाप करते हुए, आँसू बहाते हुए, दशरथ के साथ सरयू नदी पर पहुँचे। पुत्र के शरीर को छूकर दोनों मूर्च्छित हो गए। चेतना आने पर वे तरह-तरह से विलाप करने लगे। राजा दशरथ को सम्बोधित करते हुए श्रवण के पिता ने कहा, ''हे राजन्! यदि तुम जानबूझकर यह कृत्य करते तो पूरा रघुकुल ही दण्ड भोगता, परन्तु यह सबकुछ तुमसे अनजाने में ही हुआ है; अत: केवल तुम अकेले ही इसका दण्ड भोगोगे।'' उन्होंने दशरथ को शाप दिया कि जिस

© CHITRA PRAKASHAN

प्रकार पुत्र-शोक में मैं प्राण त्याग रहा हूँ ; इसी प्रकार हे दशरथ! एक दिन तुम भी पुत्र-वियोग में तड़प-तड़पकर अपने प्राण त्यागोगे। दशरथ इस शाप को सुनकर काँप उठे।

अष्टम सर्ग : निर्वाण

श्रवण के पिता द्वारा दिए गए शाप से दशरथ व्याकुल हो उठे। श्रवण के माता-पिता भी अत्यधिक अधीर थे। वे रो-धोकर कुछ शान्त से हुए, तब श्रवण कुमार के पिता का ध्यान दशरथ की ओर गया तो उन्हें शाप देने का दुःख हुआ। उन्होंने शाप लौटाना चाहा, परन्तु अब यह सम्भव नहीं था। तभी श्रवण कुमार अपने दिव्य रूप में प्रकट हुआ और उसने अपने माता-पिता को सान्त्वना दी। उसने सांसारिक आवागमन से मुक्त होने तथा स्वर्ग पहुँचने का समाचार उन्हें दिया। इस समाचार को सुनकर श्रवण के माता-पिता ने भी अपने प्राण त्याग दिए।

अथवा

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र श्रवणकुमार का चरित्र-चित्रण कीजिए।

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र श्रवणकुमार का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य में श्रवण कुमार की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार प्रस्तुत हुई हैं—

(1) मातृ-पितृ-भक्त—श्रवण कुमार एक आदर्श पुत्र है। वह अपने माता-पिता को ही परमेश्वर मानकर पूजता है। प्रातःकाल से ही वह माता-पिता की सेवा प्रारम्भ कर देता है। काँवर में बैठाकर वह उन्हें देवगृहों और विभिन्न तीर्थों की यात्रा कराता है—

बिठलाकर उनको काँवर में, करता वह गुरु भार वहन।
देवगृहों, तीर्थों को जाता, सदा कराने शुभ दर्शन॥

दशरथ के बाण से आहत होकर भूमि पर पड़ा हुआ भी श्रवण कुमार अपने माता-पिता के प्यासे होने की चिन्ता करता रहता है।

(2) सत्यवादी—श्रवण की माता शूद्र व पिता वैश्य थे। दशरथ द्वारा ब्रह्महत्या की सम्भावना प्रकट करने पर श्रवण कुमार उनको स्पष्ट बता देता है कि वह ब्रह्मकुमार नहीं है—

''वैश्य पिता, माता शूद्रा थी, मैं यों प्रादुर्भूत हुआ।''

(3) संस्कारों को महत्त्व देनेवाला—श्रवण कुमार किसी के भी प्रति भेदभाव नहीं रखता। वह सच्चे अर्थों में समदर्शी है। वह कर्म, शील एवं संस्कारों को महत्त्व देता है। वह अपने जीवन की पवित्रता का रहस्य, संस्कारों के प्रभाव को ही मानता है—

''संस्कारों के सत् प्रभाव से, मेरा जीवन पूत हुआ।''

वह आगे कहता है—

विप्र द्विजेतर के शोणित में, अन्तर नहीं, रहे यह ध्यान।
नहीं जन्म से, संस्कार से, मानव को मिलता सम्मान॥

(4) सरल स्वभाव एवं क्षमाशील—श्रवण कुमार स्वभाव से सरल है। उसके मन में किसी के प्रति ईर्ष्या या द्वेष का भाव नहीं है। दशरथ के बाण से घायल होने पर भी, पास आए हुए दशरथ का वह सम्मान करता है।

(5) भाग्यवादी—श्रवण कुमार पूर्णतः भाग्यवादी है। किसी भी अच्छी-बुरी घटना को वह भाग्य का ही खेल मानता है। बाण से घातक रूप से घायल होने को भी वह भाग्य का दोष मानता है। वह कहता है—

''जो भवितव्य वही होता है, उसे सका कब कोई टाल।''

(6) आत्म-सन्तोषी—श्रवण का जीवन के प्रति कोई मोह नहीं है। वह स्वभाव से ही सन्तोषी है। उसे भोग व ऐश्वर्य की लेशमात्र भी कामना नहीं है। उसके मन में किसी को पीड़ा पहुँचाने का भाव ही जाग्रत नहीं होता। उसका कथन है—

वन्य पदार्थों से ही होता
रहता, मम जीवन-निर्वाह।
ऋषि हूँ, नहीं किसी को पीड़ा
पहुँचाने की उर में चाह॥

श्रवण कुमार के चरित्र में मानवता के सभी उच्च आदर्शों का समन्वय हुआ है। वह सत्यवादी, क्षमाशील, सन्तोषी, सरल स्वभाववाला, मातृ-पितृभक्त, दयालु, त्यागी, तपस्वी, भाग्यवादी एवं भारतीय संस्कृति का प्रतीक है।

अस्तु; 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य का नायक भारतीय सदाचार और मर्यादा का ज्वलन्त आदर्श है।

खण्ड 'ख'

8. (क) दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 2 + 5 = 7

यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात्। अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति। सा मैत्रेयी उवाच—येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्। यदेव भगवान् केवलममृतत्वसाधनम् जानाति, तदेव मे ब्रूहि। याज्ञवल्क्य उवाच-प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे। एहि, उपविश, व्याख्यास्यामि ते अमृतत्वसाधनम्।

उत्तर : **सन्दर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** में संकलित **'आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः'** नामक पाठ से अवतरित है।

अनुवाद—''जैसा ही साधन-सम्पन्न या धनवानों का जीवन होता है, वैसा ही तुम्हारा जीवन होगा। धन से अमरता की आशा नहीं है।'' (तब) वह मैत्रेयी बोली—''जिससे मैं अमर नहीं होऊँगी, उसका मैं क्या करूँगी? आप अमरता का जो अकेला (केवल) साधन जानते हैं, वही मुझसे कहें।'' याज्ञवल्क्य ने कहा—''हमारी प्रिया होने के कारण तुम प्रिय बोलती हो। आओ, बैठो। मैं तुम्हारे लिए अमरता के साधन की व्याख्या करूँगा।''

अथवा

महापुरुषाः लौकिक-प्रलोभनेषु बद्धाः नियतलक्ष्यान्न कदापि भ्रश्यन्ति। देशसेवानुरक्तोऽयं युवा उच्चन्यायालयस्य परिधौ स्थातुं नाशक्नोत्। पण्डित-मोतीलालनेहरू-लालालाजपतरायप्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रतासङ्ग्रामेऽवतीर्णः। देहल्यां त्रयोविंशतितमे काङ्ग्रेसस्याधिवेशनेऽयम् अध्यक्षपदमलङ्कृतवान्। 'रोलट एक्ट' इत्याख्यस्य विरोधेऽस्य ओजस्विभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्लशासकाः भीताः जाताः। बहुवारं कारागारे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरः देशसेवाव्रतं नात्यजत्।

उत्तर : **सन्दर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** में संकलित **'महामना मालवीयः'** नामक पाठ से अवतरित है।

अनुवाद—महान् पुरुष सांसारिक प्रलोभनों में फँसकर निश्चित लक्ष्य से कभी विचलित नहीं होते हैं। देशसेवा में अनुरक्त यह युवक (मालवीय) उच्च न्यायालय की सीमा में नहीं रह सका। पण्डित मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय आदि अन्य राष्ट्रनायकों के साथ वे भी देश के स्वतन्त्रता संग्राम में उतरे। दिल्ली में तेईसवें कांग्रेस-अधिवेशन में इन्होंने (कांग्रेस के) अध्यक्ष-पद को सुशोभित किया। 'रौलट एक्ट' नामक कानून के विरोध में इनके ओजस्वी भाषण सुनकर अंग्रेज शासक भयभीत हो गए। अनेक बार जेल में जाने के बाद भी इस वीर ने देशसेवा के व्रत को नहीं छोड़ा।

(ख) दिए गए श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2 + 5 = 7

'न चौरहार्यं न च राजहार्यं, न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्द्धते एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

उत्तर : **सन्दर्भ**—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** में संकलित **'सुभाषितरत्नानि'** नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—ऐसा विद्या-धन न चोर द्वारा चुराया जा सकता है, न राजा द्वारा छीना जा सकता है, न भाई द्वारा बाँटा जा सकता है और न ही भारकारक है तथा व्यय करने से नित्य बढ़ता है, जो सब धनों में प्रधान है।

© CHITRA PRAKASHAN

अथवा

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव॥

उत्तर : सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** में संकलित **'नृपतिदिलीपः'** नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—ज्ञान होने पर भी मौन रहना (अर्थात् डींग न मारना), शक्ति होते हुए भी क्षमा करना, दान देते समय प्रशंसारहित रहना—इस प्रकार उन (राजा दिलीप) के (ज्ञान आदि) गुण; (मौन रहना आदि) गुणों के सहचारी होने के कारण सहोदर-से प्रतीत होते थे।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए— 2 + 2 = 4

(क) हंसपोतिका कस्य दुहिता आसीत्?

उत्तर : हंसपोतिका सुवर्णराजहंसस्य दुहिता आसीत्।

(ख) संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः कः आसीत्?

उत्तर : संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः आसीत्।

(ग) कः सर्वज्ञः भवति?

उत्तर : आत्मनः दर्शनेन नरः सर्वज्ञः भवति।

(घ) कः पाण्डवः दूतः अभवत्?

उत्तर : श्रीकृष्णः पाण्डवः दूतः अभवत्।

10. (क) 'करुण' अथवा 'रौद्र' रस का स्थायीभाव और परिभाषा दीजिए। 1 + 1 = 2

उत्तर : करुण रस का स्थायी भाव—शोक।

करुण रस की परिभाषा—बन्धु-विनाश, बन्धु-वियोग, द्रव्यनाश और प्रेमी के सदैव के लिए बिछुड़ जाने से करुण रस उत्पन्न होता है। यद्यपि दुःख का अनुभव वियोग शृंगार में भी होता है, तथापि वहाँ मिलने की आशा भी बँधी रहती है। अतएव जहाँ पर मिलने की आशा पूरी तरह समाप्त हो जाती है, वहाँ 'करुण रस' होता है।

अथवा

रौद्र रस का स्थायी भाव—क्रोध।

रौद्र रस की परिभाषा—जहाँ विपक्ष द्वारा किए गए अपमान अथवा अपने गुरुजन आदि की निन्दा आदि से क्रोध उत्पन्न होता है, वहाँ 'रौद्र रस' होता है।

प्रश्न : (ख) 'रूपक' अथवा 'यमक' अलंकार की परिभाषा तथा उदाहरण दीजिए। 2

उत्तर : रूपक अलंकार की परिभाषा—"जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित आरोप हो, वहाँ 'रूपक' अलंकार होता है।" 'रूपक' अलंकार में उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं रहता।

उदाहरण—
ओ चिंता की पहली रेखा,
अरे विश्व-वन की व्याली।
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण,
प्रथम कम्प-सी मतवाली।

अथवा

यमक अलंकार की परिभाषा—'यमक' का अर्थ है—'युग्म' या 'जोड़ा'। इस प्रकार "जहाँ एक शब्द अथवा शब्द-समूह का एक से अधिक बार प्रयोग हो, किन्तु उसका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ 'यमक' अलंकार होता है।"

उदाहरण— ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी,
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

प्रश्न : (ग) 'दोहा' अथवा 'बरवै' छन्द की सोदाहरण परिभाषा दीजिए। 2

उत्तर : दोहा छन्द की परिभाषा—यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। इसके विषम चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए तथा सम चरणों के अन्त में गुरु-लघु होना चाहिए।

उदाहरण— ।।। ऽ। ।। ऽ।ऽ ऽ। ऽ। ।।ऽ।
लसत मंजु मुनि मंडली, मध्य सीय रघुचंदु।
ग्यान सभा जनु तनु धरें, भगति सच्चिदानंदु॥

अथवा

बरवै छन्द की परिभाषा—यह मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 12-12 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में जगण (।ऽ।) होता है।

उदाहरण— ऽ।। ।।ऽ ।। ।। ।।। ।ऽ।
चंपक हरवा अँग मिलि, अधिक सुहाय।
जानि परै सिय हियरे, जब कुँभिलाय॥

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए— 2 + 7 = 9

(क) कोरोना : एक वैश्विक चुनौती
(ख) प्रदूषण की समस्या और समाधान
(ग) ग्रामीण-व्यवस्था और कृषक-जीवन
(घ) परहित सरिस धर्म नहिं भाई
(ङ) साहित्य और समाज।

उत्तर :

(क) कोरोना : एक वैश्विक चुनौती

प्रस्तावना—दिसम्बर, 2019 में चीन के वुहान शहर में कोरोना नामक एक नई बीमारी (वायरस) ने कहर बरपाना शुरू किया। वहाँ से यह बीमारी देखते-ही-देखते विश्व के अधिकांश देशों में फैल गई। प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोग मरने लगे। इसकी भयावहता को देखते हुए 11 मार्च, 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इसे महामारी घोषित कर दिया। इससे बचने के लिए अधिकांश देशों ने अपने यहाँ सम्पूर्ण लोकडाउन घोषित कर दिया और लगभग सारी दुनिया एक साथ अपने घरों में कैद हो गई।

कोरोना का संक्रमण—कोरोना वायरस संसार की सभी सजीव और निर्जीव वस्तुओं को संक्रमित कर देता है। यह वायरस निर्जीव वस्तुओं पर कुछ मिनटों से लेकर कई दिनों तक जीवित रहता है। मनुष्य में यह संक्रमित वस्तुओं को छूने से और संक्रमित व्यक्ति के नाक तथा मुँह से निकले नाक-थूक और वाष्प के अतिसूक्ष्म कणों के व्यक्ति के साँस तक पहुँचने से फैलता है। इसलिए इस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए मुँह और नाक पर मास्क लगाने तथा एक-दूसरे से दो गज की दूरी बनाए रखने के लिए कहा जाता है। साबुन के झाग और ऐल्कोहॉल से यह वायरस नष्ट हो जाता है; अतः बार-बार साबुन से हाथ धोने और ऐल्कोहॉल मिश्रित सैनेटाइजर (विषाणुनाशक) से हाथों और अन्य वस्तुओं को निस्संक्रमित करने के लिए कहा जाता है।

लक्षण और बचाव—कोरोना वायरस मनुष्य के श्वसन तन्त्र पर आक्रमण करता है। यह सबसे पहले आँख, नाक या मुँह के माध्यम से उसके गले में प्रवेश करता है और तीन-चार दिनों तक उसके गले में बना रहता है, जिससे गले में खिचखिच, खराश और दुःखन उत्पन्न होती है। इसी के साथ संक्रमित व्यक्ति में खाँसी और जुकाम के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। शरीर में संक्रमण ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है, उसके फेफड़ों की क्षमता कम होती जाती है और व्यक्ति को साँस लेने में परेशानी होने लगती है। कुछ लोगों की आँखों में लाली और जलन भी होने लगती है। संक्रमित व्यक्ति बुखार से पीड़ित हो जाता है। कभी-कभी पेट-दर्द, उल्टी, अतिसार आदि की परेशानी भी व्यक्ति को होने लगती है। यह जरूरी नहीं कि ये सभी लक्षण सभी संक्रमित व्यक्तियों में दिखाई दें। अधिकांश व्यक्तियों में सर्दी-जुकाम, खाँसी, बुखार और छींक आना, गले में खराश या दुःखन होना या साँस लेने में परेशानी होना आदि लक्षण ही मुख्य रूप से दिखाई देते हैं। कुछ लोगों में इनमें से कोई भी लक्षण दिखाई नहीं देता।

कोरोना का अभी तक कोई इलाज नहीं खोजा जा सका है; अतः अभी सावधानी रखना ही इसका एकमात्र बचाव है। इसका संक्रमण क्योंकि संक्रमित वस्तुओं या व्यक्तियों को छूने से फैलता है; अतः संक्रमित वस्तुओं से दूर रहना ही इससे बचाव का उपाय है। इससे बचाव के लिए प्रत्येक व्यक्ति को निम्नलिखित उपाय करने चाहिए—

(1) किसी भी वस्तु को अनावश्यक रूप से छूने से बचें; क्योंकि वह कोरोना से संक्रमित हो सकती है।

© CHITRA PRAKASHAN

(2) आपस में एक-दूसरे से कम-से-कम दो गज की दूरी बनाए रखें।
(3) हाथ न मिलाएँ, दूर से नमस्ते आदि से अभिवादन करें। अनावश्यक रूप से घर से बाहर न निकलें।
(4) घर से बाहर निकलने पर मुँह पर मास्क अवश्य लगाएँ। कार्यालयों, बाजारों, विद्यालयों आदि में भी काम करते समय पारस्परिक दूरी का पालन और मास्क का प्रयोग पूरे समय करें।
(5) खाँसते या छींकते समय नाक और मुँह को रूमाल से ढकें और रूमाल न होने पर कोहनी से नाक और मुँह को ढकें।
(6) दिनभर में थोड़े-थोड़े समयान्तराल पर साबुन से हाथ धोने की आदत डालें या सैनेटाइजर से हाथों को निस्संक्रमित करें।
(7) हाथों में दस्तानों का प्रयोग करें। हाथों को साबुन से धोए बिना या सैनेटाइज किए बिना आँख, नाक और मुँह को न छुएँ।
(8) बाजार से लाई वस्तुओं को निस्संक्रमित करने के बाद ही प्रयोग करें।
(9) सार्वजनिक स्थानों पर न थूकें। पान, बीड़ी, तम्बाकू का सेवन न करें।
(10) बाहर से घर लौटने पर जूते-चप्पल घर के बाहर ही उतारें और सम्भव हो तो साबुन के पानी से धोएँ या सैनेटाइज करें।
(11) कपड़ों को गरम पानी और डिटर्जेण्ट से धोएँ या घर से बाहर एक कोने में उतारकर रखें।
(12) ठण्डी चीजों को खाने से बचें। गरम पानी पीएँ। तुलसी, लौंग, अदरक या सौंठ और अजवाइन का काढ़ा पीएँ।
(13) शरीर की प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ानेवाले फल, टॉनिक, भोजन का प्रयोग करें।
(14) कोई भी लक्षण दिखाई देने पर स्वयं को एकान्तवास (कोरंटाइन) में रखें और तुरन्त स्वास्थ्य विभाग को सूचित करें। चिकित्सकों के निर्देशों का पालन करें।
(15) अपने मोबाइल में आरोग्य सेतु एप को डाउनलोड करें और उसे सदैव सक्रिय रखें।

विश्व की चुनौतियाँ—कोरोना महामारी के कारण आज विश्व के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं, मानवता की रक्षा के लिए इन सभी चुनौतियों पर विजय पाना आवश्यक है। कुछ मुख्य चुनौतियाँ इस प्रकार हैं—

(क) वैक्सीन अथवा इलाज खोजने की चुनौती।
(ख) अर्थव्यवस्था को बनाए रखने की चुनौती।
(ग) बेरोजगारी की चुनौती।
(घ) प्रवासी कामगारों के पुनर्वास और भरण-पोषण की चुनौती।
(ङ) व्यापार, कारखानों और यातायात को पुन: शुरू करने की चुनौती।
(च) सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को बनाए रखने की चुनौती।
(छ) भाईचारे और विश्वबन्धुत्व की भावना को बनाए रखने की चुनौती।

भारत की स्थिति और सम्भावनाएँ—भारत ने इस वायरस से बचाव के लिए बड़े योजनाबद्ध तरीके से काम किया है, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ पर प्रतिदिन कोरोना को हराकर स्वस्थ होनेवालों की संख्या संक्रमित होनेवाले लोगों की संख्या के आस-पास ही रहती है, जोकि विश्व में सर्वाधिक है। इस वायरस से बचाव के लिए भारत ने विश्व को योग, आयुर्वेद और हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन जैसी अंग्रेजी दवाओं के सम्मिश्रण के उपाय सुझाए हैं। डॉक्टरों, नर्सों आदि के द्वारा पहनी जानेवाली पीपीई किट के उत्पादन में भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है। वह विदेशों को पीपीई किट, अंग्रेजी और आयुर्वेदिक दवाओं का निर्यात करके उनके लिए संकटमोचक बनकर उभरा है। विश्व की अनेक बड़ी व्यापारिक कम्पनियाँ चीन को छोड़कर भारत में निवेश करने का मन बना चुकी हैं। इससे भारत सहित सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी।

उपसंहार—अन्तत: यही कहा जा सकता है कि प्रधानमन्त्री मोदीजी के कुशल नेतृत्व में भारत न केवल कोरोना पर विजय प्राप्त करेगा, अपितु विश्वगुरु की भूमिका का निर्वहन करते हुए सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन भी करेगा।

(ख) प्रदूषण की समस्या और समाधान

प्रस्तावना (प्रदूषण का अर्थ)—प्रदूषण वायु, जल एवं स्थल की भौतिक, रासायनिक और जैविक विशेषताओं में होनेवाला वह अवांछनीय परिवर्तन है, जो मनुष्य और उसके लिए लाभदायक दूसरे जन्तुओं, पौधों, औद्योगिक संस्थानों तथा दूसरे कच्चे माल इत्यादि को किसी भी रूप में हानि पहुँचाता है।

जीवधारी अपने विकास और व्यवस्थित जीवनक्रम के लिए एक सन्तुलित वातावरण पर निर्भर करते हैं। सन्तुलित वातावरण में प्रत्येक घटक एक निश्चित मात्रा में उपस्थित रहता है। कभी-कभी वातावरण में एक अथवा अनेक घटकों की मात्रा कम अथवा अधिक हो जाया करती है या वातावरण में कुछ हानिकारक घटकों का प्रवेश हो जाता है; परिणामत: वातावरण दूषित हो जाता है, जो जीवधारियों के लिए किसी-न-किसी रूप में हानिकारक सिद्ध होता है। इसे ही प्रदूषण कहते हैं।

विभिन्न प्रकार के प्रदूषण—विकसित और विकासशील सभी देशों में विभिन्न प्रकार के प्रदूषण विद्यमान हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(क) वायु-प्रदूषण—वायुमण्डल में विभिन्न प्रकार की गैसें एक विशेष अनुपात में उपस्थित रहती हैं। जीवधारी अपनी क्रियाओं द्वारा वायुमण्डल में ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड का सन्तुलन बनाए रखते हैं। अपनी श्वसन प्रक्रिया द्वारा हम ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते रहते हैं। हरे पौधे प्रकाश की उपस्थिति में कार्बन डाइऑक्साइड लेकर ऑक्सीजन निष्कासित करते रहते हैं। इससे वातावरण में ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड का सन्तुलन बना रहता है, किन्तु मानव अपनी अज्ञानता और आवश्यकता के नाम पर इस सन्तुलन को बिगाड़ता रहता है। इसे ही वायु-प्रदूषण कहते हैं।

(ख) जल-प्रदूषण—सभी जीवधारियों के लिए जल बहुत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। पौधे भी अपना भोजन जल के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं। जल में अनेक प्रकार के खनिज तत्त्व, कार्बनिक-अकार्बनिक पदार्थ तथा गैसें घुली रहती हैं। यदि जल में ये पदार्थ आवश्यकता से अधिक मात्रा में एकत्र हो जाते हैं तो जल प्रदूषित होकर हानिकारक हो जाता है।

'केन्द्रीय जल-स्वास्थ्य इंजीनियरिंग अनुसन्धान संस्थान' के अनुसार भारत में प्रति 1,00,000 व्यक्तियों में से 360 व्यक्तियों की मृत्यु आन्त्रशोथ (टायफॉइड, पेचिश आदि) से होती है, जिसका कारण अशुद्ध जल है। शहरों में भी शत-प्रतिशत निवासियों के लिए स्वास्थ्यकर पेयजल का प्रबन्ध नहीं है। देश के अनेक शहरों में पेयजल किसी निकटवर्ती नदी से लिया जाता है और प्राय: इसी नदी में शहर के मल-मूत्र और कचरे तथा कारखानों से निकलनेवाले अवशिष्ट पदार्थों को प्रवाहित कर दिया जाता है, परिणामस्वरूप हमारे देश की अधिकांश नदियों का जल प्रदूषित होता जा रहा है।

(ग) रेडियोधर्मी प्रदूषण—परमाणु शक्ति उत्पादन केन्द्रों और परमाणु परीक्षण के फलस्वरूप जल, वायु तथा पृथ्वी का प्रदूषण निरन्तर बढ़ता जा रहा है। यह प्रदूषण आज की पीढ़ी के लिए ही नहीं, वरन् आनेवाली पीढ़ियों के लिए भी हानिकारक सिद्ध होगा। परमाणु विस्फोट के समय उत्पन्न रेडियोधर्मी पदार्थ वायुमण्डल की बाह्य परतों में प्रवेश कर जाते हैं, जहाँ पर वे ठण्डे होकर संघनित अवस्था में बूँदों का रूप ले लेते हैं और बहुत छोटे-छोटे धूल के कणों के रूप में वायु के झोंकों के साथ समस्त संसार में फैल जाते हैं। द्वितीय महायुद्ध में नागासाकी तथा हिरोशिमा में हुए परमाणु बम के विस्फोट से बहुत-से मनुष्य अपंग हो गए थे। इतना ही नहीं, इस प्रकार के प्रभावित क्षेत्रों की भावी सन्तति भी अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो गई।

(घ) ध्वनि-प्रदूषण—अनेक प्रकार के वाहन; जैसे मोटरकार, बस, जेट विमान, ट्रैक्टर, लाउडस्पीकर, बाजे एवं कारखानों के सायरन व विभिन्न प्रकार की मशीनों आदि से ध्वनि-प्रदूषण उत्पन्न होता है। ध्वनि की तरंगें जीवधारियों की क्रियाओं को प्रभावित करती हैं। अधिक तेज ध्वनि से मनुष्य के सुनने की शक्ति का ह्रास होता है और उसे ठीक प्रकार

© CHITRA PRAKASHAN

से नींद भी नहीं आती। यहाँ तक कि ध्वनि-प्रदूषण के प्रभावस्वरूप स्नायुतन्त्र पर कभी-कभी इतना दबाव पड़ जाता है कि पागलपन का रोग उत्पन्न हो जाता है।

(ङ) रासायनिक प्रदूषण—प्राय: कृषक अधिक पैदावार के लिए कीटनाशक, शाकनाशक और रोगनाशक दवाइयों तथा रसायनों का प्रयोग करते हैं। इनका स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। आधुनिक पेस्टीसाइड्स का अन्धाधुन्ध प्रयोग भी लाभ के स्थान पर हानि ही पहुँचा रहा है। जब ये रसायन वर्षा के जल के साथ बहकर नदियों द्वारा सागर में पहुँच जाते हैं तो ये समुद्री जीव-जन्तुओं तथा वनस्पति पर घातक प्रभाव डालते हैं। इतना ही नहीं, किसी-न-किसी रूप में मानव-शरीर भी इनसे प्रभावित होता है।

प्रदूषण पर नियन्त्रण—पर्यावरण में होनेवाले प्रदूषण को रोकने व उसके समुचित संरक्षण के लिए विगत कुछ वर्षों से समस्त विश्व में एक नई चेतना उत्पन्न हुई है। औद्योगीकरण से पूर्व यह समस्या इतनी गम्भीर कभी नहीं हुई थी और न इस परिस्थिति की ओर वैज्ञानिकों व अन्य लोगों का उतना ध्यान ही गया था, किन्तु औद्योगीकरण और जनसंख्या दोनों ही की वृद्धि ने संसार के सामने प्रदूषण की गम्भीर समस्या उत्पन्न कर दी है।

प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्तिगत और सरकारी दोनों ही स्तरों पर प्रयास आवश्यक हैं। जल-प्रदूषण के निवारण एवं नियन्त्रण के लिए भारत सरकार ने सन् 1974 ई० से 'जल-प्रदूषण निवारण एवं नियन्त्रण अधिनियम' लागू किया है। इसके अन्तर्गत एक 'केन्द्रीय बोर्ड' व सभी प्रदेशों में 'प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड' गठित किए गए हैं। इन बोर्डों ने प्रदूषण-नियन्त्रण की योजनाएँ तैयार की हैं तथा औद्योगिक कचरे के लिए भी मानक निर्धारित किए हैं।

उद्योगों के कारण उत्पन्न होनेवाले प्रदूषण को रोकने के लिए भारत सरकार ने हाल ही में एक महत्त्वपूर्ण निर्णय यह लिया है कि नए उद्योगों को लाइसेंस दिए जाने से पूर्व उन्हें औद्योगिक कचरे के निस्तारण की समुचित व्यवस्था तथा पर्यावरण विशेषज्ञों से स्वीकृति भी प्राप्त करनी होगी। इसी प्रकार उन्हें धुएँ तथा अन्य प्रदूषणों के समुचित ढंग से निष्कासन और उसकी व्यवस्था का भी दायित्व लेना होगा।

वनों की अनियन्त्रित कटाई को रोकने के लिए कठोर नियम बनाए गए हैं। इस बात के प्रयास किए जा रहे हैं कि नए वनक्षेत्र बनाए जाएँ और जनसामान्य को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित किया जाए। पर्यावरण के प्रति जागरूकता से ही हम आनेवाले समय में और अधिक अच्छा एवं स्वास्थ्यप्रद जीवन व्यतीत कर सकेंगे और आनेवाली पीढ़ी को प्रदूषण के अभिशाप से मुक्ति दिला सकेंगे।

उपसंहार—जैसे-जैसे मनुष्य अपनी वैज्ञानिक शक्तियों का विकास करता जा रहा है, प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। विकसित देशों द्वारा वातावरण का प्रदूषण सबसे अधिक बढ़ रहा है। यह एक ऐसी समस्या है, जिसे किसी विशिष्ट क्षेत्र या राष्ट्र की सीमाओं में बाँधकर नहीं देखा जा सकता। यह विश्वव्यापी समस्या है, इसलिए सभी राष्ट्रों का संयुक्त प्रयास ही इस समस्या से मुक्ति पाने में सहायक हो सकता है।

(ग) ग्रामीण-व्यवस्था और कृषक-जीवन

प्रस्तावना—भारत एक कृषिप्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनता ग्रामों में निवास करती है। यह कहना भी सर्वथा उचित ही प्रतीत होता है कि ग्राम ही भारत की आत्मा है, लेकिन रोजगार और अन्य सुविधाओं के कारण ग्रामीण शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। ग्राम भारतीय सभ्यता के प्रतीक हैं। भोजन एवं अन्य नित्यप्रति की आवश्यकताएँ गाँव ही पूर्ण करते हैं। भारत का औद्योगिक स्वरूप भी ग्रामीण कृषकों पर ही निर्भर है। वस्तुत: भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार ग्राम ही हैं। यदि गाँवों का विकास होगा तो देश भी समृद्ध होगा।

कृषकों की सामाजिक समस्याएँ—विकास के इस युग में भी गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन तथा परिवहन के साधनों की समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी है, जिसके कारण भारतीय किसान को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वह साधनों के अभाव में अपने बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबन्ध भी नहीं कर पा रहा है, जो उसके पिछड़ने का सबसे बड़ा कारण है।

आर्थिक समस्याएँ—गाँवों के अधिकांश किसानों की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। उसकी उपज का उचित मूल्य उसे नहीं मिल पाता। धन के अभाव में वह अच्छी पैदावार भी नहीं ले पाता, जिसका प्रभाव सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास पर पड़ता है। गाँवों में निर्धनता, भुखमरी और बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर है। कृषकों को कृषि से सम्बन्धित जानकारी सुगमता से सुलभ नहीं हो पाती।

गाँवों की वर्तमान स्थिति—गाँवों में पक्की सड़कों का अभाव है। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा मनोरंजन के साधनों का उपयुक्त प्रबन्ध नहीं है। बेरोजगारी अपने चरम पर है तथा संचार के समुचित साधनों, पेय-जल, उपयुक्त निर्देशन एवं परामर्श सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव है।

भारत में कृषि की स्थिति—कृषि क्षेत्र में हमारी श्रमशक्ति का 55 प्रतिशत हिस्सा आजीविका प्राप्त कर रहा है और सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 26 प्रतिशत इसी क्षेत्र में मिलता है। देश के कुल निर्यात में कृषि का योगदान लगभग 25·6 प्रतिशत है। अनेक समस्याओं के बावजूद भी आज हम खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हैं।

भारतीय कृषि में विज्ञान का योगदान—जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। पहले इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए अन्नपूर्ति करना असम्भव ही प्रतीत होता था, परन्तु आज हम अन्न के मामले में आत्मनिर्भर हो गए हैं। इसका श्रेय आधुनिक विज्ञान को ही है। विभिन्न प्रकार के उर्वरकों, बुआई-कटाई के आधुनिक साधनों, कीटनाशक दवाओं तथा सिंचाई के कृत्रिम साधनों ने खेती को अत्यन्त सुविधापूर्ण एवं सरल बना दिया है।

गाँवों के विकास हेतु नवीन योजनाएँ—गाँव के विकास हेतु सरकार द्वारा नवीन योजनाओं का शुभारम्भ किया जा रहा है। पंचवर्षीय योजनाओं में गाँवों के विकास को महत्त्व दिया जा रहा है। गाँवों में परिवहन, विद्युत्, सिंचाई के साधन, पेयजल, शिक्षा आदि की व्यवस्था हेतु व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। किसानों को उन्नत बीजों का प्रयोग करने के लिए विभिन्न योजनाओं द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। आधुनिक कृषि यन्त्र खरीदने के लिए विभिन्न प्रकार के अनुदान दिए जा रहे हैं। जगह-जगह कृषि अनुसन्धान केन्द्र खोले जा रहे हैं। किसानों के उत्थान के लिए राष्ट्रीय-कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना की गई है, जिसका उद्देश्य कृषि, पशुपालन, कुटीर तथा ग्रामोद्योग को आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहित करना है।

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक—राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना सन् 1982 ई० को हुई थी। इसका उद्देश्य कृषि, लघु उद्योगों, कुटीर तथा ग्रामोद्योगों, दस्तकारियों और ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए ऋण उपलब्ध कराना था, ताकि समेकित ग्रामीण विकास को प्रोत्साहन दिया जा सके और ग्रामीण क्षेत्रों को खुशहाल बनाया जा सके।

कृषि अनुसन्धान और शिक्षा—कृषि अनुसन्धान और शिक्षा विभाग की स्थापना कृषि मन्त्रालय के अन्तर्गत सन् 1973 ई० में की गई थी। यह विभाग कृषि, पशुपालन और मत्स्यपालन के क्षेत्र में अनुसन्धान और शैक्षिक गतिविधियाँ संचालित करने के लिए उत्तरदायी है। कृषि मन्त्रालय के कृषि अनुसन्धान और शिक्षा विभाग के प्रमुख संगठन 'भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्' ने कृषि प्रौद्योगिकी के विकास, निवेश सामग्री तथा खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता लाने के लिए प्रमुख वैज्ञानिक जानकारियों को आम लोगों तक पहुँचाने के मामले में प्रमुख भूमिका निभाई है। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् की गतिविधियाँ मुख्य रूप से आठ विषयों में विभाजित हैं; जैसे—फसल विज्ञान, बागवानी, मृदा, कृषि विज्ञान और वानिकी, कृषि इंजीनियरी, पशु विज्ञान, मत्स्यिकी कृषि विस्तार और कृषि शिक्षा।

बागवानी—भारत की जलवायु और मृदा में व्यापक भिन्नता पाई जाती है, जो विविध प्रकार की बागवानी फसलों; जैसे फलों, सब्जियों, कन्द फसलों, सजावटी पौधे, औषधीय पौधे, मसाले तथा रोपण फसलों; जैसे नारियल, काजू, सुपारी आदि की खेती के लिए काफी उपयुक्त है। भारत

© CHITRA PRAKASHAN

अब नारियल, सुपारी, काजू, अदरक, हल्दी तथा काली मिर्च का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है।

फसलों के मौसम—भारत में मोटेतौर पर तीन फसलें होती हैं—खरीफ, रबी और जायद की फसल। खरीफ के मौसम में मुख्य रूप से धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, कपास, तिल, सोयाबीन और मूँगफली की खेती की जाती है। रबी की फसल में गेहूँ, ज्वार, चना, अलसी, तोरिया और सरसों उगाई जाती हैं। जायद की फसलों में खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, लौकी आदि फसलें उगाई जाती हैं।

उद्योगों के विकास में कृषि का योगदान—सन् 1947 ई० में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद से भारत औद्योगिक विकास के मार्ग पर अग्रसर हुआ। औद्योगिक विकास में कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है। वस्त्र उद्योग, कागज उद्योग, रबड़ उद्योग तथा चीनी उद्योग पूर्णरूपेण कृषि पर ही निर्भर हैं। कृषि-उपज बढ़ाने के लिए समय-समय पर कृषकों को प्रोत्साहित किया तो जाता है, लेकिन उनकी उपज का उचित मूल्य उन्हें नहीं मिल पाता, जिसके कारण किसान वैज्ञानिक कृषि यन्त्रों का प्रयोग नहीं कर पाते। कृषि के वैज्ञानिक यन्त्रों के अभाव में किसान उद्योगों के लिए पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल तैयार नहीं कर पाते, जिसका प्रभाव उद्योगों के विकास पर पड़ता है। इसलिए औद्योगिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य मिले, ताकि किसान भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सके और वैज्ञानिक कृषि यन्त्रों का प्रयोग करके उत्पादन में वृद्धि कर सके।

उपसंहार—देश की समृद्धि के लिए ग्रामोत्थान आवश्यक है। सरकार ने भी ग्रामों के विकास के लिए सार्थक पहल की है। ग्रामीण क्षेत्रों में अब सड़कों, शिक्षा, चिकित्सा, दूर-संचार, लघु-उद्योग, विद्युत् तथा परिवहन व्यवस्था का प्रसार किया जा रहा है। कृषकों को उन्नत बीज, खाद तथा आधुनिक कृषि यन्त्र खरीदने के लिए ऋण के रूप में रुपये व अनुदान दिए जाते हैं तथा प्रत्येक क्षेत्र में किसानों को प्रोत्साहित किया जाता है। आशा है कि निकट भविष्य में कृषक आत्मनिर्भर होकर भारत को समृद्ध करने में पूर्ण योगदान देंगे।

(घ) परहित सरिस धर्म नहिं भाई

प्रस्तावना—मानव एक सामाजिक प्राणी है; अत: समाज में रहकर उसे अन्य प्राणियों के प्रति कुछ दायित्वों का भी निर्वाह करना पड़ता है। इसमें परहित अथवा परोपकार की भावना पर आधारित दायित्व सर्वोपरि है। तुलसीदासजी के अनुसार जिनके हृदय में परहित का भाव विद्यमान है, वे संसार में सबकुछ कर सकते हैं। उनके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है—

परहित बस जिनके मन माहीं। तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

सभी मनुष्य समान हैं—भगवान् द्वारा बनाए गए समस्त मानव समान हैं; अत: इनमें परस्पर प्रेमभाव होना ही चाहिए। किसी व्यक्ति पर संकट आने पर दूसरों को उसकी सहायता अवश्य करनी चाहिए। दूसरों को कष्ट से कराहते हुए देखकर भी भोग-विलास में लिप्त रहना उचित नहीं है। अकेले ही भाँति-भाँति के भोजन करना और आनन्दमय रहना तो पशुओं की प्रवृत्ति है। मनुष्य तो वही है, जो मानव-मात्र हेतु अपना सबकुछ न्योछावर करने के लिए तैयार रहे—

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥ —***मैथिलीशरण गुप्त***

प्रकृति और परोपकार—प्राकृतिक क्षेत्र में सर्वत्र परोपकार-भावना के दर्शन होते हैं। सूर्य सबके लिए प्रकाश विकीर्ण करता है। चन्द्रमा की शीतल किरणें सभी का ताप हरती हैं। मेघ सबके लिए जल की वर्षा करते हैं। वायु सभी के लिए जीवनदायिनी है। फूल सभी के लिए अपनी सुगन्ध लुटाते हैं। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते और नदियाँ अपने जल को संचित करके नहीं रखतीं। इसी प्रकार सत्पुरुष भी दूसरों के हित के लिए ही अपना शरीर धारण करते हैं—

वृच्छ कबहुँ नहीं फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर॥ —*रहीम*

परोपकार के अनेक उदाहरण—इतिहास एवं पुराणों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिनको पढ़ने से यह विदित होता है कि परोपकार के लिए महान् व्यक्तियों ने अपने शरीर तक का त्याग कर दिया। पुराण में एक कथा आती है कि एक बार वृत्रासुर नामक महाशक्तिशाली राक्षस का अत्याचार बहुत बढ़ गया था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई थी। उसका वध दधीचि ऋषि की अस्थियों से निर्मित वज्र से ही हो सकता था। उसके अत्याचारों से दु:खी होकर देवराज इन्द्र दधीचि की सेवा में उपस्थित हुए और उनसे उनकी अस्थियों के लिए याचना की। महर्षि दधीचि ने प्राणायाम के द्वारा अपना शरीर त्याग दिया और इन्द्र ने उनकी अस्थियों से बनाए गए वज्र से वृत्रासुर का वध किया। इसी प्रकार महाराज शिबि ने एक कबूतर के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर का मांस भी दे दिया। सचमुच वे महान् पुरुष धन्य हैं; जिन्होंने परोपकार के लिए अपने शरीर एवं प्राणों की भी चिन्ता नहीं की।

संसार के कितने ही महान् कार्य परोपकार की भावना के फलस्वरूप ही सम्पन्न हुए हैं। महान् देशभक्तों ने परोपकार की भावना से प्रेरित होकर ही अपने प्राणों की बलि दे दी। उनके हृदय में देशवासियों की कल्याण-कामना ही निहित थी। हमारे देश के अनेक महान् सन्तों ने भी लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन 'सर्वजन हिताय' समर्पित कर दिया। महान् वैज्ञानिकों ने अपने आविष्कारों से जन-जन का कल्याण किया है।

परोपकार के लाभ—परोपकार की भावना से मानव के व्यक्तित्व का विकास होता है। परोपकार की भावना का उदय होने पर मानव 'स्व' की सीमित परिधि से ऊपर उठकर 'पर' के विषय में सोचता है। इस प्रकार उसकी आत्मिक शक्ति का विस्तार होता है और वह जन-जन के कल्याण की ओर अग्रसर होता है।

परोपकार भ्रातृत्व भाव का भी परिचायक है। परोपकार की भावना ही आगे बढ़कर विश्वबन्धुत्व के रूप में परिणत होती है। यदि सभी लोग परहित की बात सोचते रहें तो परस्पर भाईचारे की भावना में वृद्धि होगी और सभी प्रकार के लड़ाई-झगड़े स्वत: ही समाप्त हो जाएँगे।

परोपकार से मानव को अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। इसका अनुभव सहज में ही किया जा सकता है। यदि हम किसी व्यक्ति को संकट से उबारें, किसी भूखे को भोजन दें अथवा किसी नंगे व्यक्ति को वस्त्र दें तो इससे हमें स्वाभाविक आनन्द की प्राप्ति होगी।

© CHITRA PRAKASHAN

(ङ) साहित्य और समाज

प्रस्तावना (साहित्य का अर्थ)—साहित्य वह है, जिसमें प्राणी के हित की भावना निहित है। साहित्य मानव के सामाजिक सम्बन्धों को दृढ़ बनाता है; क्योंकि उसमें सम्पूर्ण मानव-जाति का हित निहित रहता है। साहित्य द्वारा साहित्यकार अपने भाव और विचारों को समाज में प्रसारित करता है, इस कारण उसमें सामाजिक जीवन स्वयं मुखरित हो उठता है।

साहित्य की विभिन्न परिभाषाएँ—**डॉ० श्यामसुन्दरदास** ने साहित्य का विवेचन करते हुए लिखा है—"भिन्न-भिन्न काव्य-कृतियों का समष्टि-संग्रह ही साहित्य है।" **मुंशी प्रेमचन्द** ने साहित्य को "जीवन की आलोचना" कहा है। उनके विचार से साहित्य चाहे निबन्ध के रूप में हो, कहानी के रूप में हो या काव्य के रूप में हो, साहित्य को हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।

आंग्ल विद्वान् **मैथ्यू आर्नोल्ड** ने भी साहित्य को जीवन की आलोचना माना है—"Poetry is, at bottom, a criticism of life." पाश्चात्य विद्वान् **वर्सफील्ड** ने साहित्य की परिभाषा देते हुए लिखा है—"Literature is the brain of humanity." अर्थात् साहित्य मानवता का मस्तिष्क है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि या लेखक अपने समय का प्रतिनिधि होता है। जिस प्रकार बेतार के तार का संग्राहक यन्त्र आकाशमण्डल में विचरती हुई विद्युत् तरंगों को पकड़कर उनको शब्दों में परिवर्तित कर देता है, ठीक उसी प्रकार कवि या लेखक अपने समय के परिवेश में व्याप्त विचारों को पकड़कर मुखरित कर देता है।

साहित्यकार का महत्त्व—कवि और लेखक अपने समाज के मस्तिष्क भी हैं और मुख भी। साहित्यकार की पुकार समाज की पुकार है। साहित्यकार समाज के भावों को व्यक्त कर सजीव और शक्तिशाली बना देता है। वह समाज का उन्नायक और शुभचिन्तक होता है। उसकी रचना में समाज के भावों की झलक मिलती है। उसके द्वारा हम समाज के हृदय तक पहुँच जाते हैं।

साहित्य और समाज का पारस्परिक सम्बन्ध—साहित्य और समाज का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। साहित्य का सृजन जन-जीवन के धरातल पर ही होता है। समाज की समस्त शोभा, उसकी श्रीसम्पन्नता और मान-मर्यादा साहित्य पर ही अवलम्बित है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक अशान्ति या निर्जीवता एवं सामाजिक सभ्यता या असभ्यता का निर्णायक एकमात्र साहित्य ही है। कवि एवं समाज एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं; अत: साहित्य समाज से भिन्न नहीं है। यदि समाज शरीर है तो साहित्य उसका मस्तिष्क। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** के शब्दों में, ''प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है।''

साहित्य हमारे अमूर्त अस्पष्ट भावों को मूर्त रूप देता है और उनका परिष्कार करता है। वह हमारे विचारों की गुप्त शक्ति को सक्रिय करता है। साथ ही साहित्य, गुप्त रूप से, हमारे सामाजिक संगठन और जातीय जीवन के विकास में निरन्तर योगदान करता रहता है। साहित्यकार हमारे महान् विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसीलिए हम उन्हें अपने जातीय सम्मान और गौरव के संरक्षक मानकर यथेष्ट सम्मान प्रदान करते हैं। जिस प्रकार शेक्सपीयर एवं मिल्टन पर अंग्रेजों को गर्व है, उसी प्रकार कालिदास, सूर एवं तुलसी पर हमें भी गर्व है; क्योंकि इनका साहित्य हमें एक संस्कृति और एक जातीयता के सूत्र में बाँधता है। जैसा हमारा साहित्य होता है, वैसी ही हमारी मनोवृत्तियाँ बन जाती हैं। हम उन्हीं के अनुकूल आचरण करने लगते हैं। इस प्रकार साहित्य केवल हमारे समाज का दर्पणमात्र न रहकर उसका नियामक और उन्नायक भी होता है।

सामाजिक परिवर्तन और साहित्य—साहित्य और समाज के इस अटूट सम्बन्ध को हम विश्व-इतिहास के पृष्ठों में भी पाते हैं। फ्रांस की राज्य-क्रान्ति के जन्मदाता वहाँ के साहित्यकार रूसो और वाल्टेयर हैं। इटली में मैजिनी के लेखों ने देश को प्रगति की ओर अग्रसर किया। हमारे देश में प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में भारतीय ग्रामों की आँसुओं-भरी व्यथा-कथा को मार्मिक रूप में व्यक्त किया। उन्होंने किसानों पर जमींदारों द्वारा किए जानेवाले अत्याचारों का चित्रण कर जमींदारी-प्रथा के उन्मूलन का जोरदार समर्थन किया। स्वतन्त्रता के पश्चात् जमींदारी उन्मूलन और भूमि-सुधार की दृष्टि से जो प्रयत्न किए गए हैं; वे प्रेमचन्द आदि साहित्यकारों की रचनाओं में निहित प्रेरणाओं के ही परिणाम हैं। बिहारी ने तो मात्र एक दोहे के माध्यम से ही अपनी नवोढ़ा रानी के प्रेमपाश में बँधे हुए तथा अपनी प्रजा एवं राज्य के प्रति उदासीन राजा जयसिंह को राजकार्य की ओर प्रेरित कर दिया था—

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बँध्यो, आगे कौन हवाल॥

साहित्य की शक्ति—निश्चय ही साहित्य असम्भव को भी सम्भव बना देता है। उसमें भयंकरतम अस्त्र-शस्त्रों से भी अधिक शक्ति छिपी है। **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी** के शब्दों में, ''साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती। यूरोप में हानिकारक धार्मिक रूढ़ियों का उद्घाटन साहित्य ने ही किया है। जातीय स्वातन्त्र्य के बीज उसी ने बोए हैं, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के भावों को भी उसी ने पाला-पोसा और बढ़ाया है। पतित देशों का पुनरुत्थान भी उसी ने किया है।''

साहित्य का लक्ष्य—साहित्य हमारे आन्तरिक भावों को जीवित रखकर हमारे व्यक्तित्व को स्थिर रखता है। वर्तमान भारतवर्ष में दिखाई देनेवाला परिवर्तन अधिकांशत: विदेशी साहित्य के प्रभाव का ही परिणाम है। रोम ने यूनान पर राजनैतिक विजय प्राप्त की थी; किन्तु यूनान ने अपने साहित्य द्वारा रोम पर मानसिक एवं भावात्मक रूप से विजय प्राप्त की और इस प्रकार सारे यूरोप पर अपने विचार और संस्कृति की छाप लगा दी। साहित्य की विजय शाश्वत होती है और शस्त्रों की विजय क्षणिक। अंग्रेज तलवार द्वारा भारत को दासता की शृंखला में इतनी दृढ़तापूर्वक नहीं बाँध सके, जितना अपने साहित्य के प्रचार और हमारे साहित्य का ध्वंस करके सफल हो सके। यह उसी अंग्रेजी का प्रभाव है कि हमारे सौन्दर्य सम्बन्धी विचार, हमारी कला का आदर्श, हमारा शिष्टाचार आदि सभी यूरोप के अनुरूप हो गए हैं।

साहित्य पर समाज का प्रभाव—सत्य तो यह है कि साहित्य और समाज दोनों कदम-से-कदम मिलाकर चलते हैं। भारतीय साहित्य का उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि की जा सकती है। भारतीय दर्शन सुखान्तवादी है। इस दर्शन के अनुसार मृत्यु और जीवन अनन्त हैं तथा इस जन्म में बिछुड़े प्राणी दूसरे जन्म में अवश्य मिलते हैं। यहाँ तक कि भारतीय दर्शन में ईश्वर का स्वरूप भी आनन्दमय ही दर्शाया गया है। यहाँ के नाटक भी सुखान्त ही रहे हैं। इन्हीं सब कारणों से भारतीय साहित्य आदर्शवादी भावों से परिपूर्ण और सुखान्तवादी दृष्टिकोण पर आधारित रहा है। इसी प्रकार भौगोलिक दृष्टि से भारत की शस्यश्यामला भूमि, कल-कल का स्वर उत्पन्न करती हुई नदियाँ, हिमशिखरों की धवल शैलमालाएँ, वसन्त और वर्षा के मनोहारी दृश्य आदि ने भी हिन्दी-साहित्य को कम प्रभावित नहीं किया है।

उपसंहार—अन्त में हम कह सकते हैं कि समाज और साहित्य में आत्मा और शरीर जैसा सम्बन्ध है। समाज और साहित्य एक-दूसरे के पूरक हैं, इन्हें एक-दूसरे से अलग करना सम्भव नहीं है; अत: आवश्यकता इस बात की है कि साहित्यकार सामाजिक कल्याण को ही अपना लक्ष्य बनाकर साहित्य का सृजन करते रहें।

12. **(क) (i) 'नाविक:' का सन्धि-विच्छेद है—** 1

(अ) नाव + इक: (ब) नौ + इक:
(स) नव + अक: (द) नावि + इक:।

उत्तर : (ब) नौ + इक:।

(ii) 'सज्जन:' का सन्धि-विच्छेद है— 1

(अ) सज् + जन: (ब) सत् + जन:
(स) सज्ज + न: (द) सत् + न:।

उत्तर : (ब) सत् + जन:।

(iii) 'पशवश्चरन्ति' में सन्धि है— 1

(अ) हशि च (ब) रोरि
(स) विसर्जनीयस्य स: (द) खरि च।

उत्तर : (स) विसर्जनीयस्य स:।

(ख) (i) 'अनुदिनम्' में समास है— 1

(अ) कर्मधारय (ब) बहुव्रीहि
(स) तत्पुरुष (द) अव्ययीभाव।

उत्तर : (द) अव्ययीभाव।

(ii) 'विद्याधनम्' में समास है— 1

(अ) अव्ययीभाव (ब) द्वन्द्व
(स) कर्मधारय (द) बहुव्रीहि।

उत्तर : (स) कर्मधारय।

13. **(क) (i) 'चुर्' धातु, लोट्लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप बनेगा—** 1

(अ) चोरयामि (ब) चुरयानि
(स) चोरयेयम् (द) चोरयानि।

उत्तर : (द) चोरयानि।

(ii) 'करोतु' रूप होता है 'कृ' धातु के— 1

(अ) लृट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ब) लोट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(स) लङ्लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(द) लट्लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन।

उत्तर : (ब) लोट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

© CHITRA PRAKASHAN

(ख) (i) 'नामसु' रूप है 'नामन्' शब्द का— **1**

(अ) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ब) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन
(स) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
(द) तृतीया विभक्ति, बहुवचन।

उत्तर : (ब) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन।

(ii) 'नाम्नि' रूप है सरित् शब्द का— **1**

(अ) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ब) पंचमी विभक्ति, बहुवचन
(स) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
(द) सप्तमी विभक्ति, एकवचन।

उत्तर : (द) सप्तमी विभक्ति, एकवचन।

(ग) (i) 'नीत्वा' शब्द में प्रत्यय है— **1**

(अ) तव्यत्
(ब) क्त्वा
(स) अनीयर्
(द) वतुप्।

उत्तर : (ब) क्त्वा।

(ii) 'मतिमान्' शब्द में प्रत्यय है— **1**

(अ) त्व
(ब) मतुप्
(स) अनीयर्
(द) वतुप्।

उत्तर : (ब) मतुप्।

(घ) (i) 'ग्रामं परितः सरोवराः सन्ति।' में 'ग्रामं' में द्वितीया विभक्ति है— **1**

(अ) कर्म कारक के कारण
(ब) परितः के योग में
(स) 'षष्ठी शेषे' के कारण
(द) यतश्च निर्धारणम्।

उत्तर : (ब) परितः के योग में।

(ii) 'अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि' सूत्र से किस सन्दर्भ में द्वितीया विभक्ति नहीं होती है— **1**

(अ) समय के सन्दर्भ में
(ब) चारों ओर के सन्दर्भ में
(स) ओर या तरफ के सन्दर्भ में
(द) धिक्कार या विपत्ति के सन्दर्भ में।

उत्तर : (अ) समय के सन्दर्भ में।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए— **2 + 2 = 4**

(क) तुम दोनों जाकर पढ़ो।
(ख) शिक्षा अभ्यास से आती है।
(ग) तुम आगे कहाँ जाओगे?
(घ) तुम सब जल पीते हो।

उत्तर: **संस्कृत-अनुवाद—**

(क) युवां गत्वा पठतम्।
(ख) शिक्षा अभ्यासेन भवति।
(ग) त्वम् अग्रे कुत्र गमिष्यसि?
(घ) यूयं सर्वे जलं पिबथ।

●●

© CHITRA PRAKASHAN